# घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 324- शनिवार 26- सितम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028


# मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ कांग्रेस का देशभर में प्रदर्शन

## दिल्ली-पटना में मार्च,देहरादून में कार्यकर्ता बैरिकेड्स पर चढ़े,कॉकरोच पार्टी बोली...2 अक्टूबर से आंदोलन करेंगे

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** कांग्रेस शुक्रवार को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर देशभर में प्रदर्शन कर रही है। उत्तराखंड के देहरादून में कार्यकर्ता बैरिकेडिंग पर चढ़ गए। पटना में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर वाटर कैनन का इस्तेमाल किया। इधर,कॉकरोच जनता पाटी ने शुक्रवार को कहा कि अगर ज्ञानेश कुमार ने इस्तीफा नहीं दिया तो 2 अक्टूबर से देशव्यापी आंदोलन करेंगे। कॉकरोच जनता पार्टी ने गुरुवार को ज्ञानेश कुमार को 48 घंटे की डेडलाइन दी थी। एसआईआर को लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की गई है।

याचिका में एसआईआर के फैसलों,दिशा-निर्देशों और सॉफ्टवेयर बदलावों को असंवैधानिक घोषित करने और करीब 13 करोड़ वोटर्स के नाम हटाने की एसआईटी जांच की मांग है। दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू-कश्मीर, लखनऊ,कोलकाता और देहरादून समेत कई जगहों पर कांग्रेस कार्यकर्ता सड़कों पर उतरे और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की। दिल्ली में भी चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर सुरक्षा बढ़ाई गई और कांग्रेस के प्रदर्शन को देखते हुए पुलिस बल तैनात किया गया। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में भी कांग्रेस विधायकों ने मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ नारेबाजी की। सदन की कार्यवाही शुरू होते ही कांग्रेस विधायक निजामुद्दीन भट, इरफान हाफिज लोन और इफ्तिखार अहमद ने प्रदर्शन किया। उन्होंने 'वोट बचाओ, लोकतंत्र बचाओ' और 'निष्पक्ष चुनाव के बिना लोकतंत्र नहीं' जैसे नारे लिखे बैनर दिखाए।

### लखनऊ में ज्ञानेश कुमार के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन

लखनऊ में शुक्रवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस दौरान शहर में भारी बारिश हो रही थी। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की। पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे कुछ कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया। कांग्रेस ने देशभर में राज्य चुनाव आयोग के कार्यालयों के बाहर प्रदर्शन का आह्वान किया है। पार्टी का कहना है कि वह एसआईआर और मतदाता सूची से जुड़े मुद्दों को लेकर विरोध कर रही है।

### जम्मू-कश्मीर विधानसभा में कांग्रेस विधायकों की नारेबाजी

जम्मू-कश्मीर विधानसभा में शुक्रवार को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग पर हंगामा हुआ। कांग्रेस विधायक पोस्टर लेकर पहुंचे। इन पर लिखा था कि ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दें।

### बॉम्बे हाईकोर्ट में एसआईआर के खिलाफ 2 याचिकाएं

महाराष्ट्र की वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (एसआईआर) के खिलाफ बॉम्बे हाईकोर्ट में दो याचिकाएं दायर की गई हैं। इनमें एसआईआर की संवैधानिक वैधता, प्रक्रिया और लागू करने के तरीके पर सवाल उठाए गए हैं। याचिकाकर्ताओं का दावा है कि 2 चुनाव आयुक्तों की आपत्ति के बावजूद मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने एसआईआर से जुड़े 14 आदेश जारी किए। इन आदेशों को रद्द करने और दर्ज आपत्तियों को सार्वजनिक करने की मांग की गई है।

### देशभर में कहां-कहां हुए प्रदर्शन?

- चंडीगढ़ में भी कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। पार्टी कार्यकर्ताओं ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की।
- उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ और पश्चिम बंगाल के कोलकाता में भी कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में कांग्रेस सांसद कुमारी शैलजा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग उठाई।
- असम में गौरव गोगोई के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान गौरव गोगोई को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।
- पंजाब में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने ज्ञानेश कुमार को पद से हटाने, उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने और गिरफ्तारी की मांग की। उन्होंने बताया कि कांग्रेस कार्यकर्ता 25 सितंबर को चंडीगढ़ में सेक्टर-17 स्थित चुनाव आयोग कार्यालय तक मार्च निकालेंगे।
- हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने चुनाव आयोग से जुड़े मुद्दों को लेकर राज्य चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने राज्य चुनाव आयोग के कार्यालय के बाहर लगे आधिकारिक बोर्ड पर कालिख पोत दी।
- अरुणाचल प्रदेश में विपक्षी कांग्रेस ने शुक्रवार को पार्टी के देशव्यापी आंदोलन के तहत ईटानगर में प्रदर्शन किया और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की। प्रदेश कांग्रेस ने विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर की प्रक्रिया रोकने, मतदाता सूची से जुड़े फैसलों की स्वतंत्र जांच कराने और जांच पूरी होने तक आगामी चुनावों को स्थगित रखने की मांग की।

### पवन खेड़ा ने ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की...

कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष पवन खेड़ा ने शुक्रवार को एसआईआर के दौरान 'वीआईपी' मतदाताओं के लिए अलग व्यवस्था बनाए जाने का आरोप लगाते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर सवाल उठाए और उनके इस्तीफे की मांग की। उन्होंने दावा किया कि देशभर में एसआईआर के जरिए 13 करोड़ से अधिक लोगों को मताधिकार से वंचित किया गया है और दिल्ली में चुनाव आयोग ने आम मतदाताओं तथा 'वीआईपी' मतदाताओं के लिए अलग-अलग व्यवस्था बनाई है। पार्टी मुख्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में खेड़ा ने कहा कि एक वेबसाइट की रिपोर्ट में एसआईआर से जुड़े अधिकारियों को 'वीआईपी' मतदाताओं की पहचान करने के निर्देश दिए जाने और एक अखबार की रिपोर्ट में बीएलओ ऐप में 'मार्क वीआईपी' सुविधा जोड़े जाने की बात सामने आई है। उन्होंने कहा कि बीएलओ ऐप में यह सुविधा 30 जुलाई को जोड़ी गई थी और इसके जरिए बूथ लेवल अधिकारी सत्यापन के दौरान किसी मतदाता को 'वीआईपी' के रूप में चिह्नित कर सकते हैं। इसके बाद प्रविष्टि की जांच एईआरओ, ईआरओ और दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के कार्यालय के स्तर पर की जाती है। चुनाव आयोग के मार्च 2023 के मैनुअल में सांसदों, विधायकों,घोषित पदों पर बैठे लोगों तथा कला,संस्कृति,पत्रकारिता, खेल,न्यायपालिका और लोक सेवाओं से जुड़े कुछ लोगों को 'मार्कर इलेक्टर्स' के रूप में चिह्नित करने का प्रावधान बताया गया है। खेड़ा ने आरोप लगाया कि ज्ञानेश कुमार ने अन्य दोनों चुनाव आयुक्तों की आपत्तियों को नजरअंदाज किया और चुनाव आयोग को अकेले संचालित किया। उन्होंने आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि अब मुख्य चुनाव आयुक्त को अपनी जिम्मेदारी से हट जाना चाहिए।

### जंतर-मंतर पर वाम दलों का प्रदर्शन,दीपांकर समेत हिरासत में...

दिल्ली के जंतर-मंतर पर वाम दलों,छात्र संगठनों और सिविल सोसायटी से जुड़े लोगों ने भी प्रदर्शन किया। इसमें CPI(ML) के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य,योगेंद्र यादव,AISA की अध्यक्ष नेहा,वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण,पारदर्शिता कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज और योगेंद्र यादव समेत कई लोग शामिल हुए।

# उत्तर प्रदेश में बनी ब्रह्मोस पाकिस्तान की उड़ा रही है नींद : अमित शाह

**नोएडा,25 सितम्बर 2026।** केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि आज उत्तर प्रदेश में निवेश का माहौल बना है। निवेश के माहौल की पहली प्राथमिकता है कि कानून व्यवस्था ठीक हो। अनुकूल औद्योगिक नीति बने। उद्योग को बढ़ावा और सुविधा दिया जाए। केंद्रीय गृह गृहमंत्री अमित शाह ने इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में पांच दिवसीय उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो (यूपीआइटीएस) के चौथे संस्करण का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है। यहां उद्योग के लिए अच्छा वातावरण है। उन्होंने कहा कि एक जमाने में यूपी में माफियाओं का शासन चलता था। वर्ष 2017 में भाजपा की सरकार यहां पर बनी। उसके बाद यूपी से माफियाओं को समाप्त कर दिया गया है। उन्होंने कहा इसी वजह से आज उत्तर प्रदेश में निवेश का माहौल बना है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीन बार प्रधानमंत्री बनकर नीतियों का निर्माण किया तथा नीतियों को जमीनी स्तर पर सही तरह से पहुंचाया। उन्होंने कहा कि अनुभव के आधार पर नीतियों में जो बदलाव करने थे और जो नई नीतियां बनानी थी उसमें भी प्रधानमंत्री ने स्फूर्ति दिखाकर बनाया और भारत को पूरे विश्व में एक आकर्षक उत्पादन का हब बनाने का काम किया है। उन्होंने कहा कि कुछ वक्रदृष्टा लोग भारत की जीडीपी के आंकड़ों को भी झुठलाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत ने जीडीपी के 7.8 ग्रोथ को प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में इतनी अशांति के माहौल के बीच में भी भारत ने सबसे ज्यादा विकास ग्रोथ प्राप्त किया है। अपनी विकास दर को बनाए रखा है और उसे आगे भी बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि साल 2047 तक का विश्व में हर क्षेत्र में भारत के नंबर वन बनने का संकल्प पूरा होगा।

### यूपी के डिफेंस कॉरिडोर में बढ़ रहा निवेश

**केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि उत्तर प्रदेश के झांसी, चित्रकूट, लखनऊ, आगरा, अलीगढ़ और कानपुर में डिफेंस कॉरिडोर के छह नोड विकसित किए जा रहे हैं। इन क्षेत्रों में रक्षा उपकरणों के निर्माण के लिए निवेश आ रहा है। देश का रक्षा उत्पादन अब करीब 1.78 लाख करोड़ रुपये को पार कर चुका है और 2013-14 की तुलना में रक्षा उत्पादों के निर्यात में 56 गुना वृद्धि हुई है। आज भारत के रक्षा उत्पाद करीब 80 देशों को निर्यात किए जा रहे हैं, जिसमें उत्तर प्रदेश का भी महत्वपूर्ण योगदान है। उत्तर प्रदेश सरकार ने डिफेंस कॉरिडोर के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चर और अनुकूल नीतियों के जरिए निवेश को सुगम बनाने का काम किया है। अमेठी में निर्मित एके-203 राइफल और उत्तर प्रदेश में बन रहे रक्षा उत्पाद देश की नई औद्योगिक क्षमता को दर्शाते हैं।**

## दिल्ली हाईकोर्ट का मेटा को आदेश...पीएम मोदी के साथ महिला की मॉर्फ्ड फोटो हटाएं,दीपके सहित चार को मिला नोटिस

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से तैयार की गई डीपफेक और मॉर्फ्ड तस्वीरों को लेकर दिल्ली हाई कोर्ट ने शुक्रवार को सख्त रुख अपनाया। कोर्ट ने मेटा को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से उस आपत्तिजनक कंटेंट को तुरंत हटाने का निर्देश दिया, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक महिला की कथित तौर पर मॉर्फ्ड तस्वीर दिखाई गई थी। मामले की सुनवाई जस्टिस गिरीश कठपालिया की पीठ ने की। महिला ने अपनी याचिका में आरोप लगाया है कि उसकी तस्वीर का इस्तेमाल एआई फेस-स्वैपिंग टूल के जरिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक अश्लील और आपत्तिजनक तस्वीर तैयार करने के लिए किया गया और फिर उसे सोशल मीडिया पर फैलाया गया। यह पूरा मामला एक महिला की कथित मॉर्फ्ड और डीपफेक तस्वीर से जुड़ा है। याचिका के अनुसार, जंतर-मंतर पर हुए सीजेपी के विरोध प्रदर्शन के दौरान महिला की निजी तस्वीर का कथित तौर पर बिना अनुमति इस्तेमाल किया गया और एआई फेस-स्वैपिंग टूल की मदद से उसके चेहरे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक आपत्तिजनक तस्वीर पर मॉर्फ कर दिया गया। महिला ने आरोप लगाया कि इस तस्वीर को सोशल मीडिया पर फैलाया गया और उसे जान से मारने की धमकियां भी मिल रही हैं। मामले में एफआईआर पहले ही दर्ज की जा चुकी है। दिल्ली हाई कोर्ट ने मेटा को संबंधित आपत्तिजनक कंटेंट को उसके सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से तुरंत हटाने का निर्देश दिया। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने मामले की संवेदनशीलता पर भी टिप्पणी की। रिपोर्ट के अनुसार, अदालत ने कहा कि यह मामला केवल एक महिला से जुड़ा नहीं है, बल्कि इसमें देश के प्रधानमंत्री भी शामिल हैं।

### सीजेपी नेताओं को भी नोटिस

इसके साथ ही मामले में कोर्ट ने कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) से जुड़े नेताओं सौरव दास, अभिजीत दिपके,आशुतोष रंका और रत्ना सिंह को भी नोटिस जारी किया है। महिला ने अपनी याचिका में इन लोगों पर आरोप लगाया है कि उन्होंने प्रधानमंत्री के साथ उसकी मॉर्फ्ड और अश्लील तस्वीर को फैलाया है। हालांकि,ये आरोप याचिका में किए गए दावे हैं और मामले में आगे की कानूनी प्रक्रिया जारी है। याचिका ने आरोप लगाया है कि नई दिल्ली के जंतर-मंतर पर सीजेपी के विरोध प्रदर्शनों के दौरान कथित तौर पर महिला की निजी तस्वीर का बिना अनुमति इस्तेमाल किया गया है।

## मिलन प्रधान को हाईकोर्ट से झटका

### गिरफ्तारी से राहत वाला आदेश खारिज डिवीजन बेंच ने सिंगल बेंच का आदेश पलटा

**कोलकाता,25 सितम्बर 2026।** कलकत्ता हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच (खंडपीठ) ने शुक्रवार को कांग्रेस के नंदीग्राम उपचुनाव में कांग्रेस की ओर से प्रत्याशी मिलन प्रधान को 2007 के एक आपराधिक मामले में मिली राहत खत्म कर दी। मुख्य न्यायाधीश रवींद्र विठ्ठलराव घुगे की अध्यक्षता वाली पीठ ने सिंगल बेंच (एकल पीठ) के उस आदेश को रद्द कर दिया, जिसमें पुलिस को 12 अक्तूबर तक प्रधान के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करने का निर्देश दिया गया था। पीठ में न्यायमूर्ति ओम नारायण राय भी शामिल थे। अदालत ने कहा कि आपराधिक कानून में किसी आरोपी को इस तरह की अंतरिम सुरक्षा देने का कोई प्रावधान नहीं है। पीठ ने कहा कि अगर किसी आरोपी को गिरफ्तार किया जाता है तो वह जमानत मांग सकता है। वहीं, गिरफ्तारी की आशंका होने पर आरोपी अग्रिम जमानत के लिए अदालत का रुख कर सकता है। डिवीजन बेंच ने यह भी कहा कि कानून सभी के लिए समान है। चुनाव लड़ने वाले व्यक्ति के मामले में अलग तरीके से विचार नहीं किया जा सकता। सिंगल बेंच का आदेश रद्द होने के बाद कांथी एसीजेएम अदालत की ओर से प्रधान को 7 अक्टूबर तक न्यायिक हिरासत में भेजने का आदेश प्रभावी रहेगा।

## पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बेहतर बनाना सरकार का विजन : नितिन गडकरी

**भोपाल,25 सितम्बर 2026।** केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि पब्लिक ट्रांसपोर्ट को बेहतर बनाना सरकार का विजन है। देश में ट्रांसपोर्ट व्यवस्था सुधारने के लिए 5 एजेंडा तैयार किए गए हैं, जिसमें पहला क्लीन ट्रांसपोर्ट है। उन्होंने कहा कि देश के एयर पॉल्यूशन में करीब 40 प्रतिशत हिस्सेदारी ट्रांसपोर्ट सेक्टर की है, जिसकी जिम्मेदारी वे लेते हैं। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में प्रदूषण की जिम्मेदारी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की है और प्रदूषण कम करना सरकार का लक्ष्य है। केंद्रीय मंत्री गडकरी शुक्रवार को मध्य प्रदेश में 21 साल बाद लोक परिवहन व्यवस्था के शुभारंभ अवसर पर संबोधित कर रहे थे। राजधानी भोपाल के भेल दशहरा मैदान से प्रदेश के केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 7 शहरों के लिए 351 इंटरसिटी और इंट्रासिटी बसों को हरी झंडी दिखाई। उन्होंने कहा कि गरीबों को एसी बस में अच्छी सुविधाएं मिलनी चाहिए। डीजल बसों की तुलना में टिकट किराया 30 प्रतिशत कम होना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह उनका सपना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पहले साल प्रदेश में 1,500 बसें चलाने का लक्ष्य है। बस सेवा के विस्तार के जरिए शहरों के साथ गांवों को भी जोड़ा जाएगा और 75 प्रतिशत ग्राम पंचायतों तक बस कनेक्टिविटी पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार ने आगे चलकर 2031 तक 15 हजार बसों के संचालन का लक्ष्य भी तय किया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 5 लाख किलोमीटर से ज्यादा सड़कें बन चुकी हैं। इससे छोटे गांवों और कस्बों से आवागमन आसान हुआ है और स्कूल-कॉलेज तथा शहरों तक पहुंच भी सुगम हुई है।

## सरकार ने मणिपुर,नगालैंड और अरुणाचल प्रदेश में AFSPA की समयसीमा बढ़ाई, 1 अक्टूबर से 6 महीने के लिए लागू...

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर के तीन राज्यों मणिपुर,नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में सशस्त्र बल अधिनियम यानी अफस्पा को छह महीने के लिए बढ़ा दिया है। गृह मंत्रालय की ओर से शुक्रवार को जारी गजट अधिसूचनाओं के मुताबिक, इन इलाकों में अफस्पा 1 अक्टूबर 2026 से अगले छह महीने तक लागू रहेगा। हालांकि, सरकार इसे इससे पहले वापस ले सकती है। यह फैसला तीनों राज्यों में कानून-व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के बाद लिया गया है। अधिसूचनाओं में अफस्पा की धारा 3 के तहत संबंधित क्षेत्रों को 'अशांत क्षेत्र' घोषित किया गया है। मणिपुर में गृह मंत्रालय ने पूरे राज्य को 'अशांत क्षेत्र' घोषित किया है, लेकिन पांच जिलों के 13 पुलिस थाना क्षेत्रों को इसके दायरे से बाहर रखा गया है। इंफाल पश्चिम जिले में इंफाल, लांफेल, सिटी, सिंगजामेई, पटसोई और वांगोई थाना क्षेत्र को बाहर रखा गया है। वहीं, इंफाल पूर्व में पोरोमपत, हेइंगांग और इरिलबुंग थाना क्षेत्र शामिल नहीं हैं। इसके अलावा थौबल जिले में थौबल थाना, बिष्णुपुर जिले में बिष्णुपुर और नंबोल थाना तथा काकचिंग जिले में काकचिंग थाना क्षेत्र को भी अफस्पा की अधिसूचना से बाहर रखा गया है। नागालैंड में अफस्पा को नौ जिलों में अगले छह महीने के लिए बढ़ाया गया है। इनमें दीमापुर, निउलैंड, चुमौकेदिमा, मोन, किफिरे, नोकलाक, फेक, पेरेन और मेलुरी शामिल हैं। इन जिलों को अफस्पा की धारा 3 के तहत 'अशांत क्षेत्र' घोषित किया गया है। इसके अलावा कोहिमा,मोकोकचुंग,लोंगलेंग,वोखा और जुन्हेबोटो जिलों के 21 पुलिस थाना क्षेत्रों को भी अधिसूचना में शामिल किया गया है। अरुणाचल प्रदेश में तिरप,चांगलांग और लोंगडिंग जिलों में अफस्पा की अवधि बढ़ाई गई है।

## सिक्किम में बड़ा भूस्खलन : 20 से अधिक मकान बहे अर्नब चक्रवात के असर से ओडिशा में बाढ़ का खतरा

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** चक्रवाती तूफान 'अर्नब' और उत्तर-पूर्वी भारत में जारी मूसलाधार बारिश ने देश के कई हिस्सों में जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। सिक्किम के ग्यालशिंग जिले के रिंबी गांव में गुरुवार रात हुए भीषण भूस्खलन में 20 से अधिक रिहायशी मकान और सरकारी क्वार्टर बह गए। गनीमत यह रही कि समय रहते सतर्कता बरतने के कारण अब तक किसी जनहानि की सूचना नहीं है। दूसरी ओर, बंगाल की खाड़ी से उठा 'अर्नब' चक्रवात भले ही कमजोर पड़ चुका हो, लेकिन इसके प्रभाव से ओडिशा और आसपास के राज्यों में मूसलाधार बारिश और अचानक बाढ़ का गंभीर खतरा बना हुआ है। चक्रवात और मानसून तंत्र के कारण देश के 9 राज्य सीधे तौर पर प्रभावित हुए हैं।

चक्रवात के असर से ओडिशा के दक्षिणी और पश्चिमी जिलों में रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है।

## सेवा यात्रा के अनुभव जीवन की पूंजी,भारत को किताबों से नहीं गांव-गांव जाकर समझें : पीएम मोदी

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को 'सेवा संकल्प अभियान' के सेवा यात्रियों से कहा कि यात्रा के दौरान अलग-अलग राज्यों के गांवों में लोगों से जुड़ने और सेवा कार्य करने के अनुभव उनके जीवन की अमूल्य पूंजी बनेंगे। उन्होंने युवाओं से कहा कि भारत की विविधता, गांवों की संस्कृति और समाज की सेवा भावना को किताबों से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता, इसके लिए गांव-गांव जाकर लोगों के बीच रहना जरूरी है। मोदी ने यात्रियों से यात्रा के अनुभवों को लिखने और दर्ज करते रहने का भी आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने 'सेवा संकल्प अभियान' के तहत वडनगर से वाराणसी जाने वाले दल के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संवाद में कहा कि पिछले करीब 10-12 वर्षों में गांवों में बुनियादी ढांचे और सुविधाओं में बड़ा बदलाव आया है तथा शहर और गांव के बीच का अंतर काफी कम हुआ है। उन्होंने नमो ड्रोन दीदी और लखपति दीदी जैसी पहलों का उल्लेख करते हुए यात्रियों से पूछा कि क्या उन्हें गांवों में बदलाव महसूस हो रहा है और क्या ग्रामीण भी इस बदलाव की चर्चा करते हैं। यात्रा युवाओं को इन बदलावों को प्रत्यक्ष रूप से देखने और लोगों से सीधे संवाद करने का अवसर दे रही है। मोदी ने सेवा यात्रियों को सुरक्षा का भी ध्यान रखने की सलाह दी। संवाद के दौरान यात्रियों के भगवा साफे का उल्लेख करते हुए उन्होंने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा, 'बाइक चलाते समय आप यह साफा पहनकर तो नहीं चलते होंगे? हेलमेट पहनते होंगे ना? साफा को हेलमेट मत समझ लेना।' उन्होंने यात्रियों से परिवार के संपर्क में रहने, जिन क्षेत्रों से गुजरें वहां के लोगों से जुड़ने और उनके संपर्क नंबर लेने तथा वाट्सऐप समूह बनाने का भी सुझाव दिया। प्रधानमंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें याद याद किया। दीनदयाल उपाध्याय के समाज जीवन में कर्तव्यों से जुड़े सात सूत्रों- सेवा भाव,संतुलन, संयम, समन्वय, सकारात्मकता,संवेदना और संवाद का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यही सेवा संकल्प यात्रा की आत्मा हैं। गांवों में बच्चों को पढ़ाई की सामग्री देना,पौधारोपण करना, वृद्धजनों की सेवा करना,महिलाओं से संपर्क करना और युवाओं के सपनों को समझना अलग-अलग कार्य दिखाई देते हैं, लेकिन इनके पीछे मानवता को केंद्र में रखकर समाज की सेवा का भाव समान है।

## संपादकीय

# जब चुनाव आयोग की कुर्सी पर 'टाइगर' बैठा था

दिल्ली में मुख्य चुनाव आयुक्त की कुर्सी पर बैठे एक अधिकारी ने एक दिन ऐसा संदेश दिया था, जिसने सत्ता के गलियारों में हलचल पैदा कर दी थी। नाम था–टी.एन. शेषन। दिसंबर 1990 में उन्होंने मुख्य चुनाव आयुक्त का पद संभाला और बहुत जल्दी यह स्पष्ट कर दिया कि चुनाव आयोग किसी सरकार का विभाग नहीं है।

कहा जाता है कि उन्होंने अपने कार्यालय में 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया' के बजाय भारत के निर्वाचन आयोग की पहचान को प्राथमिकता देने पर जोर दिया। यह केवल शब्दों का बदलाव नहीं था, संदेश बड़ा था–निर्वाचन आयोग सरकार से ऊपर नहीं,लेकिन सरकार से स्वतंत्र संवैधानिक संस्था जरूर है।

उस समय चुनावी आचार संहिता मौजूद थी,लेकिन उसका असर आज की तरह व्यापक रूप से महसूस नहीं होता था। शेषन ने उसे चुनावी अनुशासन का औजार बना दिया। सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग पर रोक,चुनावी खर्च की निगरानी,प्रचार के नियम और मतदाताओं को प्रभावित करने के तौर-तरीकों पर कार्रवाई–इन सबको लेकर आयोग पहले से ज्यादा सक्रिय दिखाई दिया। राजनीतिक नेताओं को यह सख्ती रास नहीं आई। विरोध हुआ,आरोप लगे,अधिकारों की सीमा को लेकर सवाल उठे। लेकिन शेषन पीछे नहीं हटे। उनका तर्क सीधा था–मेरी सीमा संविधान है।

**यही वह बात है जो आज फिर याद करने की जरूरत है...**

आज चुनाव का मैदान बदल गया है। तब दीवारों पर लिखे नारे, पोस्टर, जुलूस और लाउडस्पीकर चुनावी प्रचार के बड़े माध्यम थे। आज एक मोबाइल फोन हजारों पोस्टर से ज्यादा असर पैदा कर सकता है। सोशल मीडिया पर कुछ मिनट में संदेश लाखों लोगों तक पहुंच सकता है। फर्जी खबर, एडिटेड वीडियो, डिजिटल विज्ञापन और ऑनलाइन प्रचार ने चुनाव आयोग के सामने नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं।

**इसलिए आज सवाल यह नहीं होना चाहिए कि क्या आज कोई दूसरा शेषन आएगा?**

सवाल यह होना चाहिए कि क्या चुनाव आयोग की संस्था इतनी मजबूत है कि किसी भी सरकार,दल या प्रभावशाली नेता के सामने नियमों को समान रूप से लागू कर सके? लोकतंत्र में चुनाव की विश्वसनीयता केवल मतदान मशीन या मतदान केंद्र से तय नहीं होती। इसकी शुरुआत चुनाव से पहले ही हो जाती है। कौन सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल कर रहा है? कौन आचार संहिता की सीमा लांघ रहा है? किसके खिलाफ शिकायत पर कितनी जल्दी कार्रवाई हो रही है? क्या एक ही नियम सभी पर समान रूप से लागू हो रहा है? इन सवालों के जवाब जनता के भरोसे से जुड़े हैं।

यहां एक बात साफ होनी चाहिए–किसी भी राजनीतिक दल या नेता के खिलाफ कार्रवाई होना अपने आप में पक्षपात का प्रमाण नहीं है। उसी तरह कार्रवाई न होना भी अपने आप में पक्षपात का प्रमाण नहीं। असली कसौटी है नियम,प्रक्रिया,प्रमाण और सभी पक्षों के लिए समान मानदंड। शेषन की सबसे बड़ी विरासत शायद यही है कि उन्होंने चुनाव आयोग की ताकत को केवल कानून की किताब में नहीं रहने दिया,बल्कि उसे चुनावी मैदान में दिखाई देने वाली संस्था बनाया। आज जरूरत किसी व्यक्ति को 'टाइगर' बनाने की नहीं है। जरूरत ऐसी व्यवस्था की है,जिसमें व्यक्ति बदल जाए,लेकिन संस्था की रीढ़ न बदले। क्योंकि सरकार किसी भी दल की हो सकती है। मुख्यमंत्री कोई भी हो सकता है। प्रधानमंत्री कोई भी हो सकता है। सत्ता पक्ष और विपक्ष भी समय के साथ बदलते रहते हैं। लेकिन चुनाव आयोग को बदलती राजनीति के साथ नहीं,संविधान के साथ खड़ा रहना है। और शायद यही शेषन के दौर से आज के लिए सबसे बड़ा सबक है...चुनाव में मुकाबला नेताओं का होता है,लेकिन चुनाव की निष्पक्षता की जिम्मेदारी संस्था की होती है।

# अमेरिका की डगमगाती, अस्थिर आर्थिक और विदेश नीति

संजीव ठाकुर,रायपुर,छत्तीसगढ़,

ऐतिहासिक तौर पर अमेरिकी राष्ट्रपतियों का कार्यकाल 1789 से शुरू होता है।अमेरिकी राष्ट्रपतियों के इतिहास में जॉर्ज वॉशिंगटन से लेकर अब तक अनेक ऐसे राष्ट्रपति हुए जिनके निर्णयों ने अमेरिका की अर्थव्यवस्था, विदेश नीति,युद्ध,लोकतंत्र और विश्व व्यवस्था की दिशा बदल दी। क्या डोनाल्ड ट्रंप को अमेरिकी इतिहास का सबसे असंतुलित और असमंजसपूर्ण निर्णय लेने वाला राष्ट्रपति कहा जा सकता है? इसका सही सही कारण भावनात्मक राजनीतिक टिप्पणी से नहीं, बल्कि इतिहास के दस्तावेजों, आर्थिक परिणामों, विदेश नीति और राष्ट्रपति के निर्णयों की निरंतरता के आधार पर तलाशना होगा।

वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अमेरिका के 45वें और 47वें राष्ट्रपति हैं। उनके दो कार्यकाल लगातार नहीं रहे,इसलिए राष्ट्रपति पद की संख्या 47 है, जबकि अलग-अलग व्यक्तियों की संख्या 45 रही है। इसकी वजह 22वें राष्ट्रपति ग्रोवर क्लीवलैंड हैं, जिन्होंने दो अलग अलग लगातार कार्यकाल पूरे किए और इसीलिए उन्हें 22वें तथा 24वें राष्ट्रपति के रूप में गिना जाता है। डोनाल्ड ट्रंप का व्यक्तित्व अमेरिकी राष्ट्रपति पद की पारंपरिक शैली से अलग रहा है। उनका राजनीतिक उदय भी पारंपरिक प्रशासनिक या सैन्य पृष्ठभूमि से नहीं,बल्कि व्यवसाय और सार्वजनिक संचार की आक्रामक शैली से हुआ। 2017 में उनके पहले कार्यकाल की शुरुआत से ही अमेरिका फर्स्ट उनकी विदेश और आर्थिक नीति का प्रमुख सूत्र बना। व्यापार,आव्रजन, नाटो,चीन,ईरान,रूस और यूरोप के साथ संबंधों में उन्होंने लंबे समय से चली आ रही अमेरिकी नीतियों को चुनौती दी। उनके समर्थक इसे स्थापित व्यवस्था के विरुद्ध निर्णायक नेतृत्व मानते रहे,जबकि आलोचक इसे नीति-अनिश्चितता और संस्थागत परंपराओं से टकराव के रूप में देखते रहे।

आर्थिक नीति के क्षेत्र में ट्रंप के पहले कार्यकाल का महत्वपूर्ण पक्ष 2017 का टैक्स कट एन्ड जॉब्स एक्ट था। उनके प्रशासन ने कॉरपोरेट टैक्स में बड़ी कटौती की और विनियमन कम करने को आर्थिक विकास का साधन बनाया। प्रशासन की अपनी आधिकारिक व्याख्या में इन नीतियों को रोजगार, निवेश और आर्थिक विस्तार से जोड़ा गया है। लेकिन अमेरिकी अर्थव्यवस्था को केवल राष्ट्रपति की नीतियों का परिणाम मानना भी ऐतिहासिक रूप से सही नहीं होगा। ब्याज दरें,फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति,वैश्विक व्यापार,तकनीकी परिवर्तन और महामारी जैसे कारक भी आर्थिक परिणामों को प्रभावित करते हैं।

ट्रंप की आर्थिक नीति का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू संरक्षणवाद रहा। चीन के साथ व्यापार युद्ध ने अमेरिकी आर्थिक नीति को दशकों की मुक्त व्यापार-प्रधान दिशा से हटाकर शुल्क आधारित रणनीति की ओर मोड़ा कौंसिल आन फॉरेन रीलेसन के अनुसार ट्रंप प्रशासन ने अपने पहले कार्यकाल में चीन के लगभग आधे आयात पर शुल्क लगाए और चीन ने अमेरिकी आयात के बड़े हिस्से पर जवाबी शुल्क लगाए। समर्थकों के अनुसार इसका उद्देश्य अमेरिकी उद्योग और रोजगार की रक्षा करना था।आलोचकों ने इसके कारण लागत बढ़ने,आपूर्ति श्रृंखलाओं में व्यवधान और व्यापारिक तनाव बढ़ने की ओर ध्यान दिलाया।उनकी दूसरी पारी में यह नीति और अधिक व्यापक हुई। 2025 और 2026 में चीन के साथ शुल्क युद्ध कई चरणों से गुजरा। 2025 में अमेरिकी और चीनी शुल्कों में तीव्र वृद्धि के बाद बातचीत और अस्थायी समझौतों के दौर आए। सितंबर 2026 तक दोनों देशों के बीच व्यापार संबंधों में तनाव और अस्थायी समझौते साथ-साथ चल रहे हैं। इससे ट्रंप की नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता दिखाई देती है टकराव और समझौता दोनों उनके वार्ताकार उपकरणों का हिस्सा हैं।

**सूचना**
समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
**सम्पादक**

# हड़ताल : सुविधा मांगने का असुविधाजनक तरीका

### नेता,यूनियन,प्रबंधन बैठेंगे... जनता लाइन में लगेगी...

### हड़तालें आती-जाती रहेंगी,भुगतने वाला कभी नहीं बदलेगा...


प्रो.रितेश कुमार जैन
बड़वानी,मध्यप्रदेश

मांग किसी की हो,कीमत अक्सर किसी और को चुकानी पड़ती है। बैंक कर्मचारियों की मांग हो तो बैंक बंद, बस मालिकों की हो तो परिवहन व्यवस्था ठप्प,ट्रक ऑपरेटरों की हो तो माल ढुलाई ठप्प,डॉक्टरों की हो तो अस्पतालों की रफ्तार धीमी और शिक्षकों की हो तो पढ़ाई प्रभावित। क्षेत्र अलग,समस्याएं अलग और संगठन अलग, लेकिन हड़ताल की पटकथा लगभग एक–चेतावनी,बंद, वार्ता,आश्वासन और फिर कुछ दिनों की शांति। फिर नया मुद्दा,नई चेतावनी और वही पुराना चक्र। इस सिलसिले का सबसे स्थायी किरदार वही है,जो न कर्मचारी है,न प्रबंधन और न नीति-निर्माता–आम आदमी,जो हर बार बिना मांग किए इसकी कीमत चुकाता है।

आठ लाख बैंक कर्मचारी पांच दिवसीय बैंकिंग सप्ताह,पीएलआई योजना की वापसी/संशोधन और पेंशन अपडेशन समेत अन्य लंबित मुद्दों की मांग को लेकर हड़ताल की चेतावनी दे रहे हैं। सवाल इन मांगों से ज्यादा उस व्यवस्था पर है,जो समाधान तक पहुंचने से पहले हड़ताल की स्थिति बना देती है। काम के घंटे,पारिश्रमिक,पेंशन और सेवा-शर्तें कर्मचारियों के महत्वपूर्ण मुद्दे हैं;इन पर बातचीत होना स्वाभाविक है। फिर समाधान हड़ताल तक क्यों पहुंचे? जब यूनियन और प्रबंधन के बीच संस्थागत संवाद का रास्ता मौजूद है,तो बैंक बंद करने की नौबत क्यों आए? और यदि मार्च 2024 में समझौता हो चुका था,तो उसकी अधिसूचना अब तक क्यों नहीं हुई? हर बार हड़ताल की तारीख नजदीक आने पर ही व्यवस्था क्यों जागती है?

हड़ताल की घोषणा कर्मचारी करते हैं, लेकिन उसकी तैयारी आम आदमी को करनी पड़ती है। खबर आते ही सलाह–जरूरी लेनदेन निपटा लें,नकदी निकाल लें,चेक जमा कर दें,पेंशन का काम करा लें। यानी व्यवस्था ठप्प होने का इंतजाम भी नागरिक करे! डिजिटल बैंकिंग बढ़ी है, पर भारत सिर्फ महानगरों की मोबाइल स्क्रीन नहीं। छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में बैंक शाखा आज भी जरूरी है। पेंशनर को काउंटर चाहिए,छोटे व्यापारी को बैंकिंग व्यवस्था और लाखों लोगों के लिए हर काम ऐप से संभव नहीं। तीन दिन बैंक बंद रहना बड़े कारोबारी के लिए असुविधा हो सकता है,लेकिन बुजुर्ग की दवा, दुकानदार का भुगतान या परिवार की जरूरी रकम अटक जाए तो उसकी कीमत बड़ी होती है।

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना




हड़ताल जहां काम रोकती है,वहीं उसका असर आम आदमी की जिंदगी रोक देता है। बस मालिक किराया बढ़ाने की मांग पर हड़ताल करें तो यात्री की राह और जेब,दोनों प्रभावित होते हैं। ट्रक ऑपरेटर लागत और टोल का मुद्दा उठाएं तो माल की आवाजाही रुकती है और कीमतें बढ़ती हैं। डॉक्टरों की हड़ताल में मरीज इंतजार करता है,बिजली कर्मचारियों के आंदोलन में घर-कारोबार प्रभावित होते हैं और शिक्षकों के आंदोलन में विद्यार्थियों का समय जाता है। हड़ताल खत्म होने पर वार्ता में मांगों का हिसाब होता है, लेकिन मरीज का इंतजार, मजदूरी का नुकसान, रुका कारोबार और बढ़ी कीमतों का हिसाब कहीं नहीं होता।

हड़ताल खत्म होते ही व्यवस्था ऐसे चल पड़ती है,मानो जनता की जिंदगी में कुछ रुका ही नहीं था। कुछ मांगें मान ली जाती हैं,कुछ समितियों के हवाले,कुछ आश्वासनों में और कुछ अगली बैठक की फाइल में चली जाती हैं। बैठकें होती हैं, बयान आते हैं और मामला शांत। लेकिन उन तीन दिनों का क्या,जब बैंक के चक्कर काटता नागरिक अपना काम नहीं करा सका? छोटे व्यापारी का अटका भुगतान, पेंशनर का टला काम, कर्मचारी की गई मजदूरी और मरीज का बिगड़ा इलाज–इनका हिसाब कौन देगा? न कोई मुआवजा,न जवाबदेही, न प्रतिपूरक व्यवस्था। जैसे आम आदमी की परेशानी कोई लागत ही नहीं, जिसे हर आंदोलन बेझिझक जनता के खाते में डाल दे। बात हड़ताल का अधिकार छीनने की नहीं,उसे ऐसी व्यवस्था में बांधने की है जिसमें उसकी कीमत जनता न चुकाए। कर्मचारियों को अपनी मांग रखने और विरोध करने का अधिकार है,लेकिन अधिकार जिम्मेदारी से अलग नहीं हो सकता। बैंक हड़ताल पर हों तो न्यूनतम सेवाएं कैसे चलेंगी? सार्वजनिक परिवहन रुके तो वैकल्पिक व्यवस्था कौन करेगा? जरूरी सेवाएं प्रभावित हों तो नागरिकों के लिए आपात विकल्प क्या होंगे? और जब समझौता हो जाए, तो उसे लागू करने की समयसीमा क्यों न तय हो? सरकार,प्रबंधन और यूनियन यदि समयबद्ध बातचीत और फैसलों के लिए जवाबदेह हों,तो हड़ताल मजबूरी की आखिरी सीढ़ी बनेगी,हर मांग की पहली सीढ़ी नहीं।

हड़ताल अब आम आदमी के लिए खबर नहीं,पहले से जारी होने वाली चेतावनी बन गई है। बैंक हड़ताल की सूचना मिलते ही वह पैसे निकालने लगता है,बस हड़ताल की खबर आते ही दूसरा साधन खोजता है और ट्रकों की हड़ताल सुनते ही महंगा होने के डर से जरूरी सामान जुटाने लगता है। यानी नागरिक व्यवस्था से समाधान की उम्मीद छोड़,अव्यवस्था से बचने की तैयारी करने लगा है। इससे बड़ी विडंबना क्या होगी? लोकतंत्र की सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जानी चाहिए कि हड़ताल के बाद कितनी मांगें मानी गईं; यह भी पूछा जाना चाहिए कि मांग और समाधान के बीच आम आदमी ने कितनी कीमत चुकाई।

मांगें बदलेंगी,हड़तालें आएंगी, पर सवाल वही रहेगा–हर संघर्ष की कीमत आम आदमी ही क्यों चुकाए? पांच दिवसीय बैंकिंग सप्ताह,पेंशन सुधार, वेतन वृद्धि या डीजल लागत...मांगें जायज हो सकती हैं,पर समाधान बातचीत,समयबद्ध फैसलों और जवाबदेही से होना चाहिए। हड़ताल जरूरी हो तो उसकी मार न्यूनतम रखने की जिम्मेदारी तय हो। वरना चक्र वही रहेगा–मांग,चेतावनी,हड़ताल,जनता की परेशानी,बैठक और आश्वासन; फिर नया मुद्दा। पोस्टर, नारे और मांगें बदलेंगी, लेकिन भुगतेगा वही–आम आदमी। हड़ताल की सफलता सिर्फ मांगें मनवाने में नहीं, उसकी कीमत जनता पर न पड़ने में है। विरोध का अधिकार जरूरी है, पर ऐसा विरोध किस काम का, जिसमें मांग सुनी जाए और जनता भुगते?

# क़श्मीर की हसीन और शांत वादियों के बीच रची-बसी यह कहानी प्यार,वफ़ादारी,त्याग और तक़दीर के एक अनसुलझे रहस्य की दास्तान...


डॉ. मुश्ताक अहमद
हरदा,मध्यप्रदेश

श्रीनगर के एक कॉलेज में पढ़ने वाले ज़ुबैर और नूरीन एक-दूसरे से बेपनाह मोहब्बत करते थे। पम्पोर के केसर के खेतों और डल झील के शिकारे उनकी मुलाक़ातों के साक्षी थे।

कॉलेज की तरफ़ से गुलमर्ग और पहलगाम के लिए एक टूर का आयोजन किया गया। पहाड़ की हसीन वादियों में घूमते हुए अचानक मौसम ने करवट ली। शाम ढलते-ढलते बर्फ़ का एक ख़तरनाक तूफ़ान आ गया और तापमान ज़ीरो से कई डिग्री नीचे गिर गया। तूफ़ान के शोर में ज़ुबैर और नूरीन अपने साथियों से बिछड़ गए।

बचते-बचाते दोनों ने जंगल के बीचों-बीच स्थित लकड़ी के एक पुराने और वीरान कॉटेज में पनाह ली। बाहर भयानक ठंड और मौत का सन्नाटा था। अंदर पुरानी सूखी लकड़ियों से आग जलाई गई। उस आग की धीमी आँच, बाहर गरजती हवाएँ और मौत के ख़ौफ़ के बीच दोनों के दिल एक-दूसरे के बेहद क़रीब आ गए। उस रात जज़्बात पिघले और दोनों ने बिना कुछ कहे एक-दूसरे को अपनी रूह सौंप दी,यह एक ऐसा पाकीज़ा अहद (वचन) था जो उस तूफ़ानी रात में पूरा हुआ।

अगली सुबह जब रेस्क्यू टीम पहुँची, तो पता चला कि कॉटेज के ऊपरी हिस्से में एक भयानक भूस्खलन हुआ था। ज़ुबैर बर्फ़ के मलबे में बह गया था। हफ़्तों की खोजबीन के बाद भी ज़ुबैर का कोई सुराग़ नहीं मिला और अफ़सरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

नूरीन इस सदमे से उबर भी नहीं पाई थी कि उस पर एक और पहाड़ टूट पड़ा,उसे मालूम हुआ कि वह गर्भवती है। एक पारंपरिक कश्मीरी समाज में बिन ब्याही माँ बनना न केवल उसकी अपनी ज़िंदगी की तबाही थी,बल्कि उसके पूरे परिवार के लिए ज़िल्लत और रुसवाई का कारण था।

इसी नाज़ुक मोड़ पर नूरीन के पिता के बेहद अज़ीज़ और बावक़ार दोस्त आफ़ताब अहमद आगे आए। आफ़ताब एक अमीर,नेक और बेहद रहमदिल इंसान थे। जब उन्हें नूरीन की बेबसी का पता चला,तो उन्होंने समाज की परवाह किए बिना नूरीन का हाथ थामने का फ़ैसला किया। उन्होंने नूरीन से निकाह कर लिया ताकि उसकी और उसके आने वाले बच्चे की इज़्ज़त पर कोई आँच न आए।

समय बीतता गया। नूरीन ने एक ख़ूबसूरत बेटे को जन्म दिया,जिसका नाम आर्यन रखा गया। आफ़ताब ने आर्यन को अपने सगे बेटे से भी ज़्यादा प्यार और अपना नाम दिया। आर्यन के लिए आफ़ताब ही दुनिया के सबसे अच्छे पापा थे।

सात लंबे साल गुज़र गए...

आफ़ताब के नए बिजनेस पार्टनर और आर्किटेक्ट के तौर पर एक शख़्स की एंट्री हुई,वह कोई और नहीं,बल्कि ज़ुबैर था!

तूफ़ान वाली रात ज़ुबैर मरा नहीं था। उसे एक विदेशी मेडिकल टीम ने बचा लिया था,लेकिन वह सालों तक कोमा में रहा। याददाश्त वापस आने पर वह भागता हुआ अपनी नूरीन की तलाश में आया। लेकिन यहाँ आकर जब उसने देखा कि नूरीन शादीशुदा है और उसका एक बेटा है,तो उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।

ज़ुबैर ने जब आर्यन की उम्र और उसकी शक्ल-सूरत देखी, तो उसके मन में एक बड़ा सवाल खड़ा हुआ। थोड़ी तहक़ीक़ात के बाद उसे यक़ीन हो गया कि आर्यन उसी का बेटा है।

ज़ुबैर ने नूरीन से अकेले में मुलाक़ात की और गिड़गिड़ाते हुए कहा,

नूरीन! आर्यन हमारी उस बर्फ़ीली रात के प्यार की निशानी है। वह मेरा बेटा है, उसे मुझे लौटा दो!

नूरीन ने अपनी आँखें पोंछते हुए बेहद सख़्ती से जवाब दिया,

ज़ुबैर! तुम मेरे लिए एक ऐसा अतीत हो जो बर्फ़ में जम कर दफ़न हो चुका है। मेरे बच्चे का बाप सिर्फ़ और सिर्फ़ आफ़ताब है,जिन्होंने हमें तब पनाह दी जब पूरी दुनिया हमें पत्थर मारने के लिए तैयार थी!

ज़ुबैर आर्यन को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार था,लेकिन आफ़ताब एक बेहद दूरअंदेश और ग़ैरतमंद इंसान थे। उन्होंने इस बात को कभी अदालत या समाज के सामने नहीं आने दिया,क्योंकि वे जानते थे कि ज़रा सी भी भनक लगने पर नूरीन की इज़्ज़त और मासूम आर्यन के भविष्य पर दाग़ लग जाएगा।

आफ़ताब के घर के बंद कमरे में तीनों का आमना-सामना हुआ। ज़ुबैर के पास न तो कोई क़ानूनी सबूत था और न ही कोई ऐसा रास्ता जिससे वह नूरीन की आबरू को नुक़सान पहुँचाए बिना आर्यन पर अपना हक़ जता सके।

नूरीन ने ज़ुबैर की आँखों में आँखें डालकर साफ़ कह दिया कि एक बाप जन्म देने से नहीं,बल्कि पालने और साया बनने से बनता है। आर्यन अपने पापा आफ़ताब की उँगली पकड़े खड़ा था और उसकी मासूम आँखों में ज़ुबैर के लिए सिर्फ़ एक अजनबी का भाव था।

ज़ुबैर टूट गया। वह समझ गया कि जैविक सच चाहे जो भी हो,लेकिन मोहब्बत, परवरिश और वफ़ादारी का सच उससे कहीं बड़ा होता है। आर्यन किसका ख़ून है? यह राज़ सिर्फ़ तीन दिलों में दफ़न रहा,आफ़ताब,नूरीन और ज़ुबैर। दुनिया के लिए और ख़ुद आर्यन के लिए, वह हमेशा आफ़ताब अहमद का ही बेटा रहा।

अपनी ही औलाद के सामने अजनबी बनकर खड़ा रहना ज़ुबैर के लिए असहनीय हो गया। वह नम आँखों,पराजित मन और गहरे पछतावे के साथ आफ़ताब की हवेली से बाहर निकल आया।शाम के साए गहरे हो रहे थे और वादी पर बर्फ़ीली धुंध छा रही थी। ज़ुबैर अपने ही ख़यालों के बोझ तले दबा हुआ, पहाड़ी के किनारे बनी एक बेहद पथरीली और ख़तरनाक रस्ते पर चुपचाप चला जा रहा था। उसका दिमाग़ अतीत की यादों और अपनी तक़दीर के फ़ैसलों में उलझा हुआ था।कुछ दूरी पर आफ़ताब और नूरीन, आर्यन का हाथ थामे दूर से ज़ुबैर को जाते हुए देख रहे थे। आफ़ताब के दिल में उस इंसान के लिए एक हमदर्दी भी थी जो अपनी ही निशानी से महरूम होकर लौट रहा था।

तभी अचानक...पहाड़ी के अंधे मोड़ से एक तेज़ रफ़्तार काली वैन बेहद लापरवाही से निकलकर आई। तेज़ हॉर्न की आवाज़ हवा में गूँजी, लेकिन ज़ुबैर ख़यालों की इतनी गहरी वादी में खोया था कि उसे आने वाले ख़तरे का अहसास ही नहीं हुआ।

एक ज़ोरदार टक्कर हुई! वैन का ज़बरदस्त धक्का ज़ुबैर को लगा और वह हवा में उछलता हुआ पगडंडी के किनारे से सीधे सैकड़ों फ़ीट गहरी,पथरीली खाई में जा गिरा।नूरीन की चीख़ वादी की ख़ामोशी को चीरती हुई निकल गई। आफ़ताब और नूरीन बदहवास होकर खाई के किनारे की तरफ़ भागे। आफ़ताब ने तुरंत रेस्क्यू टीम को फ़ोन किया और ख़ुद नीचे उतरने की कोशिश की, लेकिन नीचे का मंज़र भयानक था,सफ़ेद बर्फ़ पर सुर्ख़ ख़ून के निशान थे और ज़ुबैर का शरीर पूरी तरह शांत हो चुका था।

जब तक मदद पहुँची, ज़ुबैर इस फ़ानी दुनिया को छोड़कर जा चुका था। उसकी खुली हुई नम आँखें आसमान की तरफ़ देख रही थीं, जैसे इस निर्दयी तक़दीर से अपने सवालों का जवाब माँग रही हों।

नूरीन ने आफ़ताब के काँधे पर सर रखकर अपने आँसू बहाए। आफ़ताब ने नूरीन के सिर पर शफ़क़त से हाथ रखा और मासूम आर्यन को उठाकर अपने सीने से लगा लिया। ज़ुबैर की मौत के साथ ही वह राज़ हमेशा-हमेशा के लिए उस गहरी खाई और वादी-ए-क़श्मीर की बर्फ़बारी में दफ़न हो गया। नूरीन की इज़्ज़त पर कोई आँच नहीं आई, आर्यन अपने असली रक्षक (आफ़ताब) और अपनी माँ की छाँव में सुरक्षित रहा, और यह दास्तान एक अजीब, रहस्यमयी और जज़्बाती ख़ामोशी पर मुकम्मल हुई।

# घूमन्तु गीत सीरीज़ : परिचय के बाद की विदाई




प्रियंका अग्निहोत्री
वाराणसी,उत्तरप्रदेश

कुछ रिश्ते हमारे जीवन में हमारे आने से पहले ही मौजूद होते हैं। हम उन्हें विरासत में पाते हैं–जैसे घर की पुरानी अलमारी में रखी कोई ऐसी किताब, जिसे कभी खोला नहीं, लेकिन जिसके होने का पता हमेशा रहा।वे भी मेरे लिए ऐसा ही एक रिश्ता थे।

जब मैं नई-नई इस परिवार में आई थी, तब वे हमारे घर आया करते थे। मुझे बस इतना पता था कि वे गुप्ता जी हैं,एलआईसी में हैं और उसी के किसी काम के सिलसिले में घर आते-जाते हैं। इतना ही। न मैं उनका पूरा नाम जानती थी, न कुछ और। बस इतना जानती थी कि वे नाना ससुर जी के परिचित और मित्र हैं।

घर की बहू होने के नाते मेरी भूमिका भी बहुत सहज थी–वे आते तो चाय-नाश्ता कराना,पैर छूना, हालचाल पूछना और फिर अपने काम में लग जाना। उनके साथ कोई व्यक्तिगत बातचीत या आत्मीय परिचय कभी बना ही नहीं।

मेरे लिए वे परिवार के किसी बुज़ुर्ग के परिचित थे और शायद उनके लिए मैं घर की एक बहू।

समय बीतता गया। नाना ससुर जी नहीं रहे और उनके जाने के बाद गुप्ता जी का हमारे घर आना-जाना भी लगभग समाप्त हो गया। जीवन अपनी गति से आगे बढ़ता रहा। इसी बीच मेरी अपनी दुनिया भी बदल रही थी। घर की चौखट से बाहर निकलकर मैंने साहित्य की दुनिया में अपना एक छोटा-सा रास्ता बनाना शुरू किया। लिखना, मंचों पर जाना, काव्य आयोजनों में भाग लेना, किताबें प्रकाशित करना–धीरे-धीरे मेरे नाम की अपनी एक पहचान बनने लगी थी।

एक दिन एक काव्य सम्मेलन में मुझे अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया।मैं मंच पर बैठी थी। कार्यक्रम शुरू हो चुका था कि कुछ लोग बाद में वहाँ पहुँचे। उनमें गुप्ता जी भी थे। मैंने उन्हें देखते ही पहचान लिया। बरसों पुराने घर के दृश्य जैसे एक क्षण में आँखों के सामने आ गए...वही चेहरा,वही बुज़ुर्ग उपस्थिति,जिसे मैंने कभी घर के आँगन में आते-जाते देखा था। लेकिन उन्होंने मुझे नहीं पहचाना। और यह स्वाभाविक भी था। उन्होंने मुझे हमेशा घर की बहू के रूप में देखा था। मंच पर बैठी हुई साहित्यकार उनके लिए शायद एक बिल्कुल नया परिचय थी।

कार्यक्रम समाप्त होने के बाद जाने क्यों मैं स्वयं उनके पास चली गई। आमतौर पर मैं ऐसा नहीं करती। परिवार से जुड़े किसी परिचित से भी यदि किसी सार्वजनिक मंच पर मुलाकात हो जाए तो मैं अपना परिचय देकर अपनी पहचान जताने की कोशिश नहीं करती। मुझे लगता है कि मेरी पहचान मेरे अपने काम से बने, किसी पारिवारिक संबंध के सहारे नहीं। लेकिन उस दिन कुछ और था। शायद नाना ससुर जी की स्मृति बीच में आ गई थी। शायद इतने वर्षों बाद उनके किसी पुराने मित्र को देखकर मन अचानक अतीत से जुड़ गया था। मैं उनके पास गई,उनके पैर छुए और अपना परिचय दिया।

उन्होंने मुझे गौर से देखा। शायद चेहरे की पुरानी स्मृति और वर्तमान पहचान के बीच कोई पुल बना।

बस इतनी-सी मुलाकात थी। लेकिन शायद जीवन में कुछ मुलाकातें अपने समय से बहुत बड़ी होती हैं।

कुछ महीनों बाद गुप्ता जी फिर हमारे घर आए।

कई वर्षों बाद। उस दिन उन्हें बताया गया कि मैं अब प्रकाशन का काम भी कर रही हूँ और कई किताबें प्रकाशित कर चुकी हूँ। वे बहुत खुश हुए। प्रभावित भी। उन्होंने मेरी सासू माँ से कहा...मैं एक कार्यक्रम में गया था। वहाँ ये अध्यक्ष बनी बैठी थीं। इन्होंने मुझे पहचान लिया और आकर मेरे पैर छुए।

उनके स्वर में एक अलग ही खुशी थी।

शायद इसलिए नहीं कि मैं उनके किसी पुराने परिचित की बहू थी, बल्कि इसलिए कि जिस लड़की को उन्होंने वर्षों पहले सिर्फ घर की बहू के रूप में देखा था, वह अब अपने नाम से पहचानी जा रही थी। फिर उन्होंने मेरी किताबें देखीं।

बड़े स्नेह से बोले...क्या किताबें बनाती हो बेटा? दो ज़रा पढ़ेंगे। मैंने अपनी कुछ किताबें उन्हें भेंट कर दीं। उन्होंने किताबें संभालकर रखीं और चले गए।

मुझे क्या पता था कि यह हमारी आख़िरी मुलाकात थी। उस मुलाकात के लगभग सप्ताह-दस दिन बाद फेसबुक पर उनकी तस्वीर दिखाई दी।

नीचे उनके निधन की सूचना थी। मैं कुछ देर उस स्क्रीन को देखती रही।अजीब-सा लगा।

मैं उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई तो थी नहीं।

न कोई लंबी बातचीत थी,न कोई निजी रिश्ता,न साथ बिताई हुई कोई ऐसी स्मृति जिसे बैठकर याद किया जा सके। मैं तो उनका पूरा नाम तक नहीं जानती थी। सालों तक मेरे लिए वे बस गुप्ता जी थे–एलआईसी के काम से घर आने वाले नाना ससुर जी के एक परिचित।

फिर ऐसा क्या था जो उनके जाने की खबर ने भीतर तक छू लिया?शायद इसलिए कि किसी व्यक्ति के जाने का दुःख हमेशा उसके साथ बिताए समय के अनुपात में नहीं होता। कभी-कभी दुःख इस बात का होता है कि जिस रिश्ते को हमने अभी-अभी जानना शुरू किया था,उसे जीवन ने आगे बढ़ने का अवसर ही नहीं दिया। उनसे मेरा परिचय बहुत देर से हुआ था।और विदाई बहुत जल्दी आ गई।

कभी-कभी सोचती हूँ–अगर उस दिन मैं उनसे मिलने नहीं गई होती? अगर अपना परिचय नहीं दिया होता? अगर उनके पैर छूकर यह नहीं कहा होता कि मैं वही हूँ,जिसे वे वर्षों से स्व. त्रिवेदी जी की बहू के रूप में देखते आए हैं? तो शायद उनके जाने की खबर मुझे सिर्फ एक पारिवारिक परिचित के चले जाने की खबर लगती और उस तरह से दुःख होता।

लेकिन उस एक मुलाकात के बाद वे मेरे लिए सिर्फ नाना ससुर जी के मित्र नहीं रह गए थे।

वे एक ऐसे बुज़ुर्ग बन गए थे,जिन्होंने मेरी यात्रा का एक छोटा-सा पड़ाव अपनी आँखों से देखा था। उन्होंने मुझे पहचाना था। मेरी किताबें हाथ में ली थीं।

कहा था...दो ज़रा पढ़ेंगे। पता नहीं उन्होंने पढ़ीं या नहीं। शायद समय ने उन्हें उन किताबों के पन्ने पलटने की मोहलत ही नहीं दी। उस भेंट की कोई तस्वीर नहीं है मेरे पास। उनकी आवाज़ की कोई रिकॉर्डिंग नहीं। बस एक छोटी-सी स्मृति है...एक बुज़ुर्ग का मुस्कुराकर कहना...मैंने तुम्हें मंच पर देखा था,बहुत अच्छा उद्बोधन था तुम्हारा। और अब जब कभी उनकी याद आती है तो लगता है–रिश्ते हमेशा वर्षों से नहीं बनते। कभी-कभी एक मुलाकात ही काफी होती है। और कभी-कभीज एक मुलाकात के बाद ही कोई हमेशा के लिए चला जाता है। शायद जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यही है...लोगों के जाने का दुःख भीतर बहुत देर तक घूमता रहता है।कुछ लोग हमारे जीवन में ठहरने नहीं आते।वे बस आते हैं,हमें पहचानते हैं,हमारी किसी छोटी-सी उपलब्धि पर खुश होते हैं,और फिर चुपचाप चले जाते हैं।पीछे छोड़ जाते हैं एक अधूरा परिचय और मन के किसी कोने में एक ऐसा रिश्ता, जिसका नाम शायद कभी रखा ही नहीं गया।

# 40 लाख का सौदा, फर्जी दस्तावेज और आदिवासी जमीन...

# अब कर्मचारियों-अधिकारियों की भूमिका पर भी उठा सवाल

## जमीन के खरीदार तक पहुंची पुलिस...अब 'फर्जी कागज' बनाने वालों की बारी?

शिकायत से एफआईआर,एफआईआर से गिरफ्तारी... अब सरकारी तंत्र की भूमिका की जांच कब?

आलोक दुबे की शिकायत के बाद खुलती गईं परतें,आजाद गिरफ्तार...फर्जी दस्तावेजों का 'जनक' कौन?

आदिवासी जमीन का खेल,फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र से वंशावली तक,किसने तैयार किया पूरा दस्तावेजी रास्ता?

आजाद इराकी गिरफ्तार, लेकिन बड़ा सवाल बाकी–फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र किसने बनाया, वंशावली किसने तैयार की?

कलेक्टर की जांच से खुला जमीन फर्जीवाड़ा,पहली गिरफ्तारी के बाद अब 'कागज बनाने वालों' की तलाश जरूरी

एक जैलाल की वंशावली,दूसरे जैलाल की जमीन! अब पुलिस खोलेगी फर्जी दस्तावेजों की असली कड़ी

प्रतीक्षा बस स्टैंड जमीन मामला: खरीदार गिरफ्तार,पर मृत्यु प्रमाण-पत्र से नामांतरण तक किसने बिछाया रास्ता?

-संवाददाता-

**अंबिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

प्रतीक्षा बस स्टैंड के पास स्थित बेशकीमती जमीन के कथित फर्जी अंतरण का मामला अब एक और महत्वपूर्ण मोड़ पर पहुंच गया है, शिकायत, प्रशासनिक जांच और कलेक्टर के आदेश के बाद एफआईआर दर्ज हुई और अब पुलिस ने इस मामले में पहली गिरफ्तारी की कार्रवाई की है,25 सितंबर को सरगुजा पुलिस की जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार,थाना मणिपुर, साइबर सेल और रायपुर पुलिस की संयुक्त टीम ने आजाद इराकी को रायपुर से गिरफ्तार किया है, पुलिस के अनुसार विवादित जमीन के सौदे की रकम 40 लाख रुपये बताई गई है और आरोपी ने पुलिस के समक्ष दिए गए मेमोरेण्डम कथन में दस्तावेजों के फर्जी होने की जानकारी के बावजूद जमीन का सौदा करने की बात स्वीकार की है।

लेकिन गिरफ्तारी के साथ मामला खत्म नहीं हुआ है,बल्कि अब जांच का दूसरा और ज्यादा महत्वपूर्ण सवाल सामने खड़ा हो गया है जिस फर्जी मृत्यु प्रमाण-पत्र और कथित गलत वंशावली के आधार पर पूरी जमीन की दस्तावेजी कहानी आगे बढ़ी,उसे तैयार किसने किया? और उससे भी बड़ा सवाल यह है कि क्या इस पूरी प्रक्रिया में किसी शासकीय कर्मचारी या अधिकारी की भूमिका थी? यदि थी तो वह भूमिका किस स्तर तक थी दस्तावेज तैयार करने,सत्यापन करने,वारिसान दर्ज करने, फौती नामांतरण कराने या राजस्व रिकॉर्ड बदलने तक? प्रशासनिक जांच में पटवारी तथा ग्राम पंचायत के तत्कालीन सरपंच-सचिव की भूमिका को लेकर सवाल सामने आए हैं।

**2 सितंबर की शिकायत से खुला मामला,कलेक्टर ने कराई जांच-**मामले की शुरुआत 2 सितंबर 2026 को हुई शिकायत से हुई, भाजपा पार्षद आलोक दुबे ने कलेक्टर सरगुजा के समक्ष शिकायत प्रस्तुत कर पुराने राजस्व रिकॉर्ड और जमीन के दस्तावेजों के आधार पर सवाल उठाए थे,उनका मुख्य सवाल था कि यदि जमीन पुराने सेटलमेंट और अधिकार अभिलेख में आदिवासी खातेदार के नाम दर्ज थी,तो बाद में उसके वारिस और स्वामित्व की स्थिति कैसे बदल गई,शिकायत में प्रतीक्षा बस स्टैंड के पास स्थित भूमि के जल क्षेत्र को मिट्टी डालकर पाटने और वहां प्लाटिंग किए जाने का मुद्दा भी उठाया गया था,प्रशासन ने मामले को गंभीरता से लेते हुए अंबिकापुर एसडीएम से जांच कराई,एसडीएम की जांच के बाद कलेक्टर के समक्ष प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। इसके आधार पर 23 सितंबर 2026 को कलेक्टर कार्यालय ने संबंधित लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए, साथ ही भूमि को विधिवत शासन में निहित करने की प्रक्रिया आगे बढ़ाने के निर्देश भी दिए गए,यानी यह मामला सीधे पुलिस कार्रवाई तक नहीं पहुंचा,इसके पीछे शिकायत से लेकर प्रशासनिक जांच तक की पूरी प्रक्रिया हुई।

**फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र: पूरे मामले की सबसे अहम कड़ी-**प्रशासनिक जांच में मृत्यु प्रमाण पत्र को लेकर गंभीर विसंगति सामने आई,जांच में जैलाल पिता बोधन की मृत्यु 23 अप्रैल 1976 से संबंधित मृत्यु प्रमाण पत्र का उल्लेख हुआ। लेकिन नगर निगम अंबिकापुर से कराए गए सत्यापन में यह सामने आया कि उक्त मृत्यु प्रमाण पत्र नगर निगम के रिकॉर्ड में दर्ज नहीं था और निगम द्वारा जारी नहीं किया गया था,यह जानकारी 4 मई 2026 के निगमीय जवाब से जुड़ी बताई गई है,यहीं से मामला एक सामान्य राजस्व विवाद से आगे बढ़ता है,अगर मृत्यु प्रमाण पत्र निगम ने जारी ही नहीं किया तो वह बना कहां से? किसने बनाया? किसके आवेदन पर बनाया? किसने उसमें दर्ज तथ्यों का सत्यापन किया? किस दस्तावेज के आधार पर उसे राजस्व प्रक्रिया में प्रस्तुत किया गया? और सबसे महत्वपूर्ण–क्या किसी सरकारी कर्मचारी या अधिकारी ने उस दस्तावेज को सही मानते हुए आगे की कार्रवाई की? इन सवालों का जवाब अभी सामने आना बाकी है।

**एक जैलाल की वंशावली, दूसरे जैलाल की जमीन—यहीं उलझी पूरी कहानी-** मामले की जांच में सबसे महत्वपूर्ण विसंगति वारिसान संबंधी दस्तावेजों को लेकर सामने आई है, प्रशासनिक जांच से जुड़े विवरण के अनुसार ग्राम अमलभिट्ठी के पटवारी ने जैलाल पिता देवराम के वारिसों की जानकारी तैयार की थी,आरोप/जांच का महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि इसी जानकारी का इस्तेमाल कथित तौर पर जैलाल पिता बोधन की भूमि के फौती नामांतरण के लिए किया गया,अब यही सवाल पुलिस की जांच का केंद्रीय बिंदु होना चाहिए, जैलाल पिता देवराम और जैलाल पिता बोधन की पहचान कैसे निर्धारित हुई? क्या दोनों अलग-अलग व्यक्ति थे? यदि अलग थे तो एक की वंशावली दूसरे की भूमि के नामांतरण में कैसे इस्तेमाल हुई? उस वंशावली को किसने तैयार किया? किसने उसे प्रमाणित किया? और राजस्व रिकॉर्ड में उसे स्वीकार किस स्तर पर किया गया? प्रशासनिक जांच में यही विसंगति पूरे मामले को गंभीर बनाती है।

**पटवारी से लेकर पंचायत तक—अब सरकारी तंत्र की भूमिका भी जांच का विषय-** यही वह बिंदु है जहां इस मामले का दूसरा बड़ा सवाल सामने आता है, प्रशासनिक जांच के विवरण के अनुसार पटवारी द्वारा तैयार की गई वारिसान जानकारी का उल्लेख जांच में है, साथ ही ग्राम पंचायत अमलभिट्ठी के तत्कालीन सरपंच और सचिव की भूमिका पर भी सवाल उठाए गए हैं, यह ध्यान रखना जरूरी है कि जांच में किसी कर्मचारी या अधिकारी की भूमिका पर सवाल उठना और उसका आपराधिक रूप से दोषी होना दो अलग बातें हैं, लेकिन पुलिस के लिए अब यह जांचना बेहद महत्वपूर्ण होगा कि मृत्यु प्रमाण पत्र तैयार कराने की प्रक्रिया कहां से शुरू हुई? पंचायत स्तर पर कौन-कौन से दस्तावेज बने? वारिसान/वंशावली किसने तैयार की? उसे किसने प्रमाणित किया? पटवारी ने किस आधार पर वारिसों की जानकारी तैयार की? फौती नामांतरण के दौरान पुराने अधिकार अभिलेख की जांच हुई या नहीं? नामांतरण किस अधिकारी के आदेश से हुआ? रजिस्ट्री से पहले राजस्व रिकॉर्ड और प्रस्तुत दस्तावेजों का मिलान किस स्तर पर किया गया? यही जांच तय करेगी कि यह केवल निजी पक्षों के बीच कथित दस्तावेजी फर्जीवाड़ा था या सरकारी रिकॉर्ड तक पहुंचने वाली प्रक्रिया में भी किसी स्तर पर मदद मिली।

**कलेक्टर के आदेश के बाद एफआईआर,अब पुलिस जांच में बदला मामला-** कलेक्टर की जांच के बाद 23 सितंबर को एफआईआर के निर्देश दिए गए, इसके बाद उपलब्ध एफआईआर दस्तावेज के अनुसार 24 सितंबर 2026 को थाना मणिपुर में अपराध क्रमांक 168/2026 दर्ज हुआ, मामले में भारतीय न्याय संहिता की धाराएं 318(4), 338,336(3),340(2) एवं 61(2) लगाई गई हैं,इससे यह स्पष्ट है कि मामला अब राजस्व विभाग की फाइल तक सीमित नहीं रहा,पुलिस ने इसे आपराधिक विवेचना में ले लिया है।

**25 सितंबर को पुलिस की कार्रवाई—रायपुर से आजाद इराकी गिरफ्तार-** 25 सितंबर की सरगुजा पुलिस प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार डीआईजी एवं एसएसपी के निर्देशन में थाना मणिपुर, साइबर सेल और रायपुर पुलिस की संयुक्त टीम ने आरोपी आजाद इराकी को रायपुर से गिरफ्तार किया, पुलिस के अनुसार तकनीकी जानकारी के आधार पर आरोपी के संभावित ठिकाने की पहचान की गई और रायपुर पुलिस टीम के साथ कार्रवाई की गई,पुलिस के मुताबिक गिरफ्तार आरोपी की पहचान, आजाद इराकी,पिता रियाजुद्दीन इराकी,उम्र 43 वर्ष,निवासी मस्जिद मोहल्ला जयनगर,थाना जयनगर,जिला सूरजपुर के रूप में हुई है,पुलिस का कहना है कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपने मेमोरेण्डम कथन में यह स्वीकार किया कि उसे जमीन के दस्तावेज फर्जी और कूटरचित होने की जानकारी थी, इसके बावजूद उसने 40 लाख रुपये में विवादित जमीन का सौदा किया,पुलिस ने पर्याप्त साक्ष्य पाए जाने के बाद उसे गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने की जानकारी दी है, किसी आरोपी का पुलिस पूछताछ में दिया गया कथन अंतिम न्यायिक निष्कर्ष नहीं होता; उसकी कानूनी स्थिति अदालत में साक्ष्यों के परीक्षण से तय होगी।

**नौ लोगों के खिलाफ कार्रवाई, कई आरोपी अभी फरार-**कलेक्टर की जांच के आधार पर क्रेता-विक्रेता समेत कई लोगों के खिलाफ एफआईआर की कार्रवाई के निर्देश दिए गए थे,प्रकाशित प्रशासनिक विवरणों में चंद्रशेखर यादव,आजाद इराकी,नोहरसाय, रामकुमार,श्रीलाल,पूर्णिमा,जनकुंवर,चंद्रभान यादव और मीरा यादव के नाम सामने आए हैं, पुलिस की प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि मामले में शामिल अन्य आरोपी फरार हैं और उनकी तलाश जारी है,इससे स्पष्ट है कि आजाद इराकी की गिरफ्तारी को पुलिस इस प्रकरण की अंतिम कार्रवाई नहीं मान रही है,जांच अभी जारी है और अन्य आरोपियों की भूमिका भी विवेचना के दायरे में है।

**40 लाख का सौदा—लेकिन जमीन की असली कीमत और भी बड़ा सवाल-** पुलिस की प्रेस विज्ञप्ति में विवादित जमीन का सौदा 40 लाख रुपये में किए जाने की बात सामने आई है,लेकिन प्रतीक्षा बस स्टैंड और रिंग रोड जैसे शहर के महत्वपूर्ण क्षेत्र में स्थित जमीन की बाजार कीमत को लेकर अलग-अलग रिपोर्टों में इसे करोड़ों रुपये की बेशकीमती जमीन बताया गया है,इसलिए जांच का एक पहलू यह भी हो सकता है कि जमीन का वास्तविक बाजार मूल्य क्या था,सौदे की रकम किस माध्यम से दी गई और रकम का लेन-देन किन लोगों के बीच हुआ, हालांकि इस संबंध में उपलब्ध पुलिस प्रेस विज्ञप्ति 40 लाख रुपये के कथित सौदे का उल्लेख करती है,उससे आगे भुगतान के तरीके या धन के स्रोत के बारे में अभी कोई विस्तृत आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है।

**तालाब की जमीन को पाटकर प्लाटिंग की शिकायत ने बढ़ाई गंभीरता-**मामला तब और गंभीर हुआ जब जमीन के जल क्षेत्र को मिट्टी डालकर पाटे जाने और प्लाटिंग किए जाने की शिकायत सामने आई,मीडिया रिपोर्टों के अनुसार नगर निगम की टीम ने डाली गई मिट्टी हटाकर जमीन को कब्जामुक्त कराने की कार्रवाई शुरू की थी,इसी कार्रवाई के दौरान जमीन पर अपना दावा करने वाले कुछ लोगों और निगम/प्रशासनिक अमले के बीच विवाद की स्थिति भी सामने आई थी,इसलिए अब जांच केवल पुराने दस्तावेजों तक सीमित नहीं है,एक तरफ सवाल है जमीन के रिकॉर्ड में बदलाव कैसे हुआ? दूसरी तरफ सवाल है तालाब के रूप में दर्ज जमीन पर मिट्टी डालकर उसका स्वरूप बदलने की कोशिश किस आधार पर हुई? और तीसरा सवाल जिस जमीन को खरीदने-बेचने का दावा किया गया,उस पर वास्तविक अधिकार किसके पास था?

**अब जांच की दिशा बदलनी चाहिए—**'किसने जमीन खरीदी' से आगे 'किसने कागज बनाए' तक-आजाद इराकी की गिरफ्तारी के बाद पुलिस के सामने अगली चुनौती केवल अन्य आरोपियों को पकड़ना नहीं है,इस मामले में असली दस्तावेजी कड़ी तब सामने आएगी जब पुलिस यह पता लगाएगी कि मृत्यु प्रमाण पत्र और वंशावली की शुरुआत किसने की थी,क्योंकि किसी जमीन की रजिस्ट्री अचानक नहीं होती,उससे पहले दस्तावेज तैयार होते हैं,दस्तावेजों के आधार पर वारिस तय होते हैं,वारिस के आधार पर नामांतरण होता है, नामांतरण के बाद रिकॉर्ड तैयार होता है, और उसी रिकॉर्ड के आधार पर जमीन की बिक्री का रास्ता खुलता है,यदि जांच में मृत्यु प्रमाण-पत्र फर्जी पाया जाता है और साथ ही यह भी प्रमाणित होता है कि एक दूसरे व्यक्ति की वंशावली का इस्तेमाल किया गया, तो पुलिस के लिए यह जानना आवश्यक होगा कि इन दोनों दस्तावेजों को तैयार करने और राजस्व प्रक्रिया तक पहुंचाने में कौन-कौन लोग शामिल थे।

**सबसे बड़ा सवाल: क्या सरकारी तंत्र के भीतर भी कोई कड़ी जुड़ी है?-** यही इस पूरे प्रकरण का सबसे अहम दूसरा सवाल है, फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र किसने तैयार किया? वंशावली किसने बनाई? पंचनामा किसने तैयार कराया? पटवारी ने किस आधार पर वारिसों की जानकारी तैयार की? फौती नामांतरण किस दस्तावेज के आधार पर हुआ? नामांतरण की फाइल किस अधिकारी के सामने गई? किसने दस्तावेजों को सही माना? और रजिस्ट्री से पहले किसी स्तर पर पुराने आदिवासी भूमि रिकॉर्ड और नए वारिसान रिकॉर्ड के बीच अंतर क्यों नहीं पकड़ा गया? प्रशासनिक जांच में पंचायत पदाधिकारियों और पटवारी की भूमिका को लेकर सवाल सामने आने के बाद इन बिंदुओं की पुलिस जांच और महत्वपूर्ण हो जाती है, यदि किसी शासकीय कर्मचारी या अधिकारी की भूमिका केवल लापरवाही तक सीमित थी तो उसकी प्रकृति अलग होगी,लेकिन यदि जांच में जानबूझकर गलत दस्तावेज तैयार करने, प्रमाणित करने,रिकॉर्ड बदलने या गलत नामांतरण में सहायता करने के साक्ष्य मिलते हैं, तो मामला और गंभीर हो सकता है, अभी ऐसी किसी भूमिका को तथ्य के रूप में स्थापित नहीं किया जा सकता। यह जांच का प्रश्न है और पुलिस को इसे दस्तावेजों के मूल स्रोत तक जाकर स्पष्ट करना होगा।

शिकायतकर्ता का सवाल अब पुलिस के सामने भी- आलोक दुबे की शिकायत से जिस मामले की प्रशासनिक जांच शुरू हुई,वह अब एफआईआर और गिरफ्तारी तक पहुंच चुका है, शिकायत में उठाया गया मूल सवाल था कि पुराने रिकॉर्ड में दर्ज जमीन की पहचान और वारिसों की स्थिति बाद के रिकॉर्ड में कैसे बदल गई,कलेक्टर की जांच ने दस्तावेजी विसंगतियों को सामने रखा,कलेक्टर के आदेश के बाद एफआईआर हुई और अब पुलिस ने गिरफ्तारी की है, लेकिन इस कार्रवाई के बाद शिकायत का दूसरा सवाल और बड़ा हो गया है अगर फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र था तो बनाने वाला कौन था? अगर वंशावली गलत थी तो तैयार किसने की? अगर वारिसान गलत था तो उसे प्रमाणित किसने किया? अगर नामांतरण गलत दस्तावेज पर हुआ तो राजस्व स्तर पर किसने उसे आगे बढ़ाया? इन सवालों का जवाब मिले बिना मामले की पूरी तस्वीर सामने नहीं आएगी।

### शिकायत से गिरफ्तारी तक–पूरे मामले की टाइमलाइन

- **2 सितंबर 2026:** भाजपा पार्षद आलोक दुबे ने कलेक्टर से शिकायत की।
- **इसके बाद:** कलेक्टर ने एसडीएम अंबिकापुर से मामले की जांच कराई।
- **जांच में:** पुराने राजस्व रिकॉर्ड, मृत्यु प्रमाण पत्र, वारिसान और फौती नामांतरण से जुड़ी विसंगतियों का उल्लेख हुआ।
- **23 सितंबर 2026:** कलेक्टर ने जांच रिपोर्ट के आधार पर संबंधित लोगों के खिलाफ एफआईआर के निर्देश दिए।
- **24 सितंबर 2026:** थाना मणिपुर में अपराध क्रमांक 168/2026 दर्ज हुआ।
- **25 सितंबर 2026:** सरगुजा पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई में आजाद इराकी को रायपुर से गिरफ्तार करने की जानकारी दी।
- **अब:** अन्य फरार आरोपियों की तलाश और दस्तावेजों की विस्तृत जांच जारी है।

**अब पुलिस के सामने सिर्फ जमीन नहीं, पूरा 'दस्तावेजी रास्ता' है-**इस मामले की जांच की सबसे अहम कड़ी अब यही है पुराना अधिकार अभिलेख? मृत्यु प्रमाण पत्र ? वंशावली/वारिसान? पंचायत स्तर के दस्तावेज ? पटवारी की रिपोर्ट? फौती नामांतरण? राजस्व रिकॉर्ड? विक्रय दस्तावेज? रजिस्ट्री? जमीन का कब्जा/प्लाटिंग, इस पूरी श्रृंखला में जहां भी पहला गलत दस्तावेज तैयार हुआ,वहीं से कथित फर्जीवाड़े की असली शुरुआत मानी जा सकती है,आजाद इराकी की गिरफ्तारी ने पुलिस कार्रवाई की शुरुआत जरूर कर दी है,लेकिन मामले का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय अभी बाकी है–फर्जी दस्तावेजों का स्रोत कौन था और सरकारी रिकॉर्ड तक उनकी पहुंच कैसे हुई? अगर जांच इस सवाल तक पहुंचती है और दस्तावेजों के आधार पर किसी सरकारी कर्मचारी या अधिकारी की भूमिका सामने आती है,तो कार्रवाई की दिशा जमीन के खरीदार-विक्रेता से आगे बढ़कर उस तंत्र तक जा सकती है जिसने कथित तौर पर दस्तावेजों को वैधता का रास्ता दिया,यही वह बिंदु है जहां प्रतीक्षा बस स्टैंड जमीन प्रकरण की असली परत खुल सकती है,सरगुजा पुलिस ने कहा है कि मामले की अग्रिम वैधानिक विवेचना जारी है और फरार सह-आरोपियों की तलाश की जा रही है।

# गणेश विसर्जन जुलूस में बवाल : रास्ता देने की बात पर विवाद,दरिमा थाना प्रभारी से झूमाझटकी और वाहन में तोड़फोड़,छह गिरफ्तार...

## डीजे और जुलूस से बाधित था मार्ग,समझाइश देने पहुंचे थाना प्रभारी से उलझे युवक...मणिपुर पुलिस ने छह आरोपियों को पकड़ा

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

गणेश विसर्जन की आस्था और उत्सव के बीच मणिपुर थाना क्षेत्र के जगदीशपुर में उस समय विवाद की स्थिति निर्मित हो गई, जब विसर्जन जुलूस के दौरान सड़क पर डीजे वाहन के साथ रास्ता बाधित होने को लेकर दरिमा थाना प्रभारी और जुलूस में शामिल लोगों के बीच विवाद हो गया। देखते ही देखते मामला कहासुनी से झूमाझटकी और वाहन में तोड़फोड़ तक पहुंच गया। पुलिस ने मामले में छह आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश करने की कार्रवाई की है। पुलिस के अनुसार, दरिमा थाना प्रभारी शासकीय कार्य से अंबिकापुर की ओर आ रहे थे। ग्राम जगदीशपुर मेन रोड पर गणेश विसर्जन का जुलूस निकल रहा था। जुलूस में पिकअप वाहन पर तेज आवाज में डीजे बज रहा था और इससे आम रास्ता बाधित हो गया था। थाना प्रभारी ने रास्ता देने तथा यातायात सुचारू करने के लिए जुलूस में शामिल लोगों को समझाइश देने का प्रयास किया। इसी दौरान कुछ लोग उनसे विवाद करने लगे। पुलिस का आरोप है कि विवाद बढ़ने के बाद आरोपियों ने शासकीय कार्य में बाधा उत्पन्न की और थाना प्रभारी के साथ झूमाझटकी की। इतना ही नहीं, उनके वाहन के कांच तोड़कर उसे क्षतिग्रस्त कर दिया गया। घटना के बाद मामले की रिपोर्ट मणिपुर थाने में दर्ज कराई गई और पुलिस ने प्रकरण की जांच शुरू की।

### मीडिया रिपोर्टों में मारपीट का भी उल्लेख

घटना के संबंध में सामने आई स्थानीय जानकारों ने बताया गया है कि दरिमा थाना प्रभारी एवं प्रशिक्षु डीएसपी निशांत कुर्रे रात में अपनी निजी कार से दरिमा से अंबिकापुर लौट रहे थे। कंठी-जगदीशपुर मार्ग पर गणेश विसर्जन जुलूस और डीजे के कारण यातायात प्रभावित था। रास्ता देने को लेकर विवाद बढ़ने के बाद उनके साथ हाथापाई तथा निजी वाहन में तोड़फोड़ किए जाने की बात रिपोर्ट की गई है। अंबिकापुर एसडीओपी राकेश बघेल के हवाले से भी कुछ रिपोर्टों में समझाइश के दौरान हमला होने की जानकारी दी गई है। हालांकि पुलिस की ओर से जारी विस्तृत प्रेस-नोट में मुख्य रूप से शासकीय कार्य में बाधा, झूमाझटकी और वाहन के कांच तोड़े जाने की घटना का उल्लेख किया गया है। इसलिए घटना के प्रत्येक पहलू का अंतिम स्वरूप विवेचना और न्यायिक प्रक्रिया के बाद ही स्पष्ट होगा।

**छह आरोपी गिरफ्तार :** मामले की गंभीरता को देखते हुए मणिपुर थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए घटना में शामिल छह आरोपियों को हिरासत में लिया। पूछताछ में आरोपियों ने घटना में अपनी संलिप्तता स्वीकार की। पुलिस के अनुसार,आरोपियों के विरुद्ध पर्याप्त अपराध-साक्ष्य पाए जाने के बाद उन्हें गिरफ्तार कर न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है। गिरफ्तार आरोपियों में अनिल राजवाड़े (42),धनेश्वर राजवाड़े उर्फ धन्नू (22), रामदेव राजवाड़े उर्फ चुटुल (19),शिवशंकर राजवाड़े उर्फ शिव (44),नीरज राजवाड़े (20) और मुकेश दास (18) शामिल हैं। सभी जगदीशपुर क्षेत्र के अलग-अलग मोहल्लों के निवासी बताए गए हैं।

**उत्सव के नाम पर सड़क रोकना कितना उचित?** गणेश विसर्जन धार्मिक आस्था और सामाजिक उत्सव का अवसर है, लेकिन सार्वजनिक सड़क पर जुलूस निकालते समय यातायात और आम नागरिकों की आवाजाही को लेकर प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखना भी जरूरी है। इस घटना ने इसी बुनियादी सवाल को सामने ला दिया है कि धार्मिक आयोजनों के दौरान डीजे, जुलूस और वाहनों की व्यवस्था के लिए पहले से पर्याप्त इंतजाम क्यों नहीं किए जाते? अगर पुलिस के अनुसार सड़क बाधित थी और थाना प्रभारी केवल रास्ता देने के लिए समझाइश दे रहे थे, तो बात इतनी जल्दी टकराव तक कैसे पहुंची– यह भी जांच का विषय है। दूसरी ओर, यदि किसी अधिकारी द्वारा समझाइश दिए जाने के बाद उसके साथ झूमाझटकी और वाहन में तोड़फोड़ की गई, तो यह भीड़ के कानून अपने हाथ में लेने की गंभीर स्थिति को दर्शाता है। सबसे अहम सवाल यह भी है कि विसर्जन जुलूस जैसे संवेदनशील और भीड़भाड़ वाले आयोजन में पुलिस की पर्याप्त मौजूदगी और यातायात नियंत्रण की व्यवस्था पहले से क्यों नहीं थी। क्योंकि यदि रास्ता पहले से नियंत्रित होता, डीजे और जुलूस के लिए निर्धारित मार्ग स्पष्ट होता तथा पुलिस बल मौके पर मौजूद रहता, तो मामूली विवाद के हिंसक रूप लेने की संभावना कम की जा सकती थी।

**पुलिस की कार्रवाई तेज, अब जांच की बारी :** घटना के बाद मणिपुर पुलिस ने छह आरोपियों को गिरफ्तार कर कार्रवाई जरूर तेज की है। लेकिन पुलिस के सामने अब यह भी चुनौती है कि पूरे घटनाक्रम की निष्पक्षता से जांच की जाए–जुलूस में कितने लोग मौजूद थे,विवाद की शुरुआत किस बात से हुई, किसने झूमाझटकी की, वाहन में तोड़फोड़ किसने की और घटना में अन्य लोगों की क्या भूमिका थी। पुलिस ने अन्य संभावित संलिप्त लोगों की भूमिका की भी जांच शुरू की है। उपलब्ध मीडिया रिपोर्टों में भी छह लोगों की गिरफ्तारी के साथ अन्य लोगों की तलाश/भूमिका की जांच का उल्लेख किया गया है।

### डीजे और जुलूस की व्यवस्था पर भी उठे सवाल

घटना के बाद केवल आरोपियों की गिरफ्तारी से मामला खत्म नहीं होता। ऐसे आयोजनों में डीजे की आवाज, सड़क पर वाहनों की स्थिति,जुलूस की लंबाई,यातायात प्रबंधन और आपातकालीन आवागमन जैसे मुद्दों पर प्रशासन की जवाबदेही भी महत्वपूर्ण है। एक तरफ पुलिस धार्मिक आयोजनों में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार अपील करती है,दूसरी तरफ यदि मुख्य मार्ग पर जुलूस के कारण आवागमन पूरी तरह प्रभावित होता है और किसी वाहन को निकलने के लिए विवाद की स्थिति बनती है,तो यह व्यवस्था की कमी की ओर भी इशारा करता है।

## घुनघुट्टा बांध में डूबे 19 वर्षीय युवक का शव मिला,गेट के पास फंसा था

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

घुनघुट्टा बांध में गुरुवार की दोपहर छलांग लगाने वाले 19 वर्षीय युवक का शव शुक्रवार को करीब 1 बजे एसडीआरएफ की टीम ने बरामद कर लिया। युवक का शव बांध के गेट के पास पानी में फंसा मिला। टीम ने काफी मशक्कत के बाद शव को बाहर निकाला। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार मणिपुर थाना क्षेत्र निवासी रितिक गुरुवार दोपहर करीब 3 से 4 बजे स्कूटी से शहर से लगभग 10 किलोमीटर दूर घुनघुट्टा बांध पहुंचा था। बांध में इन दिनों पानी लबालब भरा हुआ है। बताया जा रहा है कि युवक ने बांध के ऊंचाई वाले हिस्से से पानी में छलांग लगा दी। वहां मौजूद मछुआरों ने उसे डूबते देखा तो बचाने के लिए पानी में उतरे,लेकिन युवक गहरे पानी में चला गया और उनका पता नहीं चल सका। सूचना मिलने पर दरिमा पुलिस मौके पर पहुंची और युवक की तलाश शुरू कराई गई। शाम होने के कारण रेस्क्यू अभियान रोकना पड़ा। शुक्रवार सुबह पुलिस और एसडीआरएफ की टीम ने दोबारा तलाश शुरू की। कई घंटे की मशक्कत के बाद टीम को युवक का शव बांध के गेट के पास फंसा मिला। युवक की मौत की खबर मिलते ही मौके पर पहुंचे परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। युवक ने यह कदम क्यों उठाया, इसका कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है। बताया जा रहा है कि उसने घटना से एक दिन पहले अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिल्म 'आशिकी-2' से संबंधित स्टेटस लगाया था। पुलिस उसके सोशल मीडिया अकाउंट और अन्य पहलुओं की जांच कर रही है। मौत के कारणों का पता जांच के बाद ही चल सकेगा।

## आईटीआई भवन से विद्युतीकरण का सामान चोरी

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

लुंड्रा थाना क्षेत्र के ग्राम डडगांव में नवनिर्मित आईटीआई भवन से विद्युतीकरण का सामान चोरी होने का मामला सामने आया है। सहायक अभियंता विद्युत यांत्रिकी पीडब्ल्यूडी संभाग अंबिकापुर पुरंजन सिदार ने पुलिस को बताया है कि,ग्राम डडगांव में नवनिर्मित शासकीय आईटीआई भवन में एक साल पहले विद्युतीकरण का काम हुआ था। स्विच बोर्ड,कंप्यूटर बोर्ड,एमसीबी,लाइटिंग कंडक्टर,सीलिंग फैन और परिसर में वरुणा कंपनी की समर्सिबल पंप लगा था। 16 सितम्बर को आकस्मिक निरीक्षण में पाया गया कि सभी उपकरण उखाड़कर चोरी कर लिए गए हैं। सिर्फ समरसिबल पंप की कीमत 16,800 रुपये है, बाकी सामान की कीमत का आंकलन जारी है। घटना की सूचना कार्यपालन अभियंता को दी गई है।

## नकली जेवर को असली बताकर 5 महिलाओं से 2 लाख की ठगी

-संवाददाता-
रामानुजनगर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के रामानुजनगर थाना अंतर्गत नकली जेवर को असली बताकर ठगी करने का मामला सामने आया है। रामानुजनगर थाना क्षेत्र के ग्राम शिवपुर की दुर्गावती सिंह समेत 5 महिलाओं के साथ 2 लाख 3 हजार 600 रुपये की धोखाधड़ी के मामले में पुलिस ने आरोपी पिता-पुत्र के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर लिया है और जांच शुरू कर दी है। पीड़िता दुर्गावती सिंह पति रूपेश सिंह 30 वर्ष ने थाने में लिखित शिकायत देकर बताया कि मार्च-अप्रैल 2026 के बीच ग्राम नारायणपुर निवासी रूपेश साहू और उसका पिता ललन साहू गांव-गांव में घूमकर सोना-चांदी बेचने आए थे। दुर्गावती को इन्होंने सोने का बड़ा लॉकेट 2 नग, छोटा लॉकेट 1 नग,चांदी की पायल 1 नग और चांदी की अंगूठी 1 नग दिया और असली बताकर 80 हजार रुपये ले लिए। घर आने के बाद संदेह की स्थिति बनी और सोनार को दिखाया तो सभी जेवर नकली निकले। जांच में पता चला कि आरोपियों ने सिर्फ दुर्गावती ही नहीं, बल्कि उसी गांव की मालती पति भुवनेश्वर से 21 हजार, चमेली सिंह पति सुरेंद्र से 16 हजार, सांता सिंह पति नरेंद्र से 47,200 और कलावती सिंह पति देव सिंह से 39,400 रुपये की ठगी नकली जेवर थमाकर की है। सभी को इसी तरह नकली जेवर असली के रेट पर थमाए गए थे। पीड़िता के अनुसार आरोपियों ने शिवपुर, भुवनेश्वरपुर और बद्रिकाआश्रम के आसपास के कई गांवों में भी इसी तरह लोगों को ठगा है। रामानुजनगर पुलिस ने प्रार्थिया की शिकायत पर आरोपी रूपेश साहू और ललन साहू के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की धारा 318(4) धोखाधड़ी और 3(5) के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया है।

# डीजे की आवाज कम करने कहा तो मां-बेटे पर हमला, नाबालिग के पेट में कैंची लगने से हालत गंभीर

## गणेश प्रतिमा विसर्जन कार्यक्रम के दौरान हुआ विवाद, मां के हाथ में भी आई गंभीर चोट; दो आरोपी गिरफ्तार, अन्य की भूमिका की जांच जारी

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

गणेश प्रतिमा विसर्जन कार्यक्रम के दौरान तेज आवाज में डीजे बजाने को लेकर शुरू हुआ विवाद देखते ही देखते मारपीट और हमले में बदल गया। खैरबार रोड स्थित घुटरापारा में डीजे की आवाज कम करने की बात कहना एक महिला और उसके नाबालिग बेटे को भारी पड़ गया। आरोप है कि इसी बात को लेकर विवाद के बाद वहां मौजूद महिला-पुरुषों ने मां-बेटे के साथ मारपीट की और धारदार हथियार से हमला कर दिया। घटना में नाबालिग के पेट में कैंची लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया, जबकि उसकी मां के हाथ में भी गंभीर चोट आई है। जानकारी के अनुसार घुटरापारा में गणेश प्रतिमा विसर्जन कार्यक्रम चल रहा था। इस दौरान डीजे काफी तेज आवाज में बजाया जा रहा था। इसी बीच स्थानीय निवासी मंजू गुप्ता और उनके नाबालिग बेटे ने डीजे की आवाज कम करने के लिए कहा। बताया जा रहा है कि इसी बात को लेकर मौके पर मौजूद कुछ लोगों से उनका विवाद हो गया। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया और आरोप-प्रत्यारोप के बीच मारपीट शुरू हो गई। आरोप है कि विवाद के दौरान वहां मौजूद महिला-पुरुषों ने मंजू गुप्ता और उनके बेटे के साथ मारपीट की। इसी दौरान धारदार वस्तु से हमला किए जाने से मंजू के हाथ में गंभीर चोट आई। वहीं,उनके नाबालिग बेटे के पेट में कैंची लग गई। पेट में गंभीर चोट लगने के बाद नाबालिग की हालत बिगड़ गई और उसे तत्काल उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया।

**आईसीयू में भर्ती है घायल नाबालिग :** अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद नाबालिग की गंभीर स्थिति को देखते हुए उसे आईसीयू में भर्ती किया गया है। चिकित्सकों की निगरानी में उसका उपचार जारी है। घटना के बाद परिवार में चिंता का माहौल है। वहीं,मारपीट और हमले की पूरी घटना से जुड़े सीसीटीवी फुटेज भी सामने आने की बात कही जा रही है,जिसके आधार पर पुलिस घटनाक्रम की जांच कर रही है।

**मां की शिकायत पर दो आरोपी गिरफ्तार :** घटना के संबंध में मंजू गुप्ता की रिपोर्ट पर कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू की। पुलिस ने घुटरापारा निवासी गुड्डू गुप्ता,उम्र 35 वर्ष, और उसकी पत्नी पिंकी गुप्ता,उम्र 34 वर्ष, को गिरफ्तार किया है। पुलिस द्वारा दोनों आरोपियों से घटना के संबंध में पूछताछ की जा रही है। पुलिस के अनुसार घटना में अन्य लोगों की भूमिका की भी जांच की जा रही है। सीसीटीवी फुटेज,प्रत्यक्षदर्शियों के बयान और उपलब्ध अन्य साक्ष्यों के आधार पर यह पता लगाया जा रहा है कि विवाद के दौरान कौन-कौन लोग मौके पर मौजूद थे और मारपीट तथा हमले में उनकी क्या भूमिका रही। पुलिस का कहना है कि जांच में जिन लोगों की संलिप्तता सामने आएगी,उनके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

## बारिश में भी नहीं थमी बप्पा की विदाई,झांकियों के साथ उमड़ा शहर

### 10 दिन की पूजा के बाद नम आंखों से गणपति को विदा, घड़ी चौक पर सजी झांकियों ने मोहा मन

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

दस दिनों तक घरों और पंडालों में पूजा-अर्चना के बाद शुक्रवार को गणपति बप्पा की विदाई हुई। बारिश के बीच भी श्रद्धालुओं का उत्साह कम नहीं हुआ। शहर के विभिन्न गणेश पूजा समितियों ने प्रतिमाओं के साथ आकर्षक झांकियां निकालीं। ढोल-नगाड़ों की धुन पर नाचते-गाते श्रद्धालु शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए विसर्जन के लिए रवाना हुए। विसर्जन जुलूस के दौरान श्रद्धालुओं ने अबीर-गुलाल उड़ाकर और जयकारे लगाकर माहौल को भक्तिमय बना दिया। दस दिनों तक साथ रहे विघ्नहर्ता को श्रद्धालुओं ने अगले वर्ष फिर आने की कामना के साथ विदाई दी। गणेश प्रतिमाओं के विसर्जन को लेकर बाल गंगाधर तिलक गणपति स्थापना समिति की ओर से घड़ी चौक पर विशेष आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान गणेश की आरती और पूजन से हुई। इसके बाद विभिन्न गणेश पूजा समितियों की ओर से निकाली गई झांकियां घड़ी चौक पहुंचीं। समिति के सदस्यों ने झांकियों का स्वागत किया और भगवान गणेश का पूजन किया। आकर्षक सजावट और धार्मिक विषयों पर आधारित झांकियां श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहीं।

**बारिश के बीच भी दिखा उत्साह :** शुक्रवार को रुक-रुककर बारिश होती रही, इसके बावजूद विसर्जन जुलूस में श्रद्धालुओं की भीड़ बनी रही। भक्तों ने नाचते-गाते और जयकारे लगाते हुए गणपति को विदाई दी। श्रद्धालुओं ने परिवार और शहर की सुख-समृद्धि की कामना के साथ प्रतिमाओं का विसर्जन किया।

**जुलूस के दौरान सुरक्षा की कमान पुलिस के हाथ :** विसर्जन जुलूस को देखते हुए जिला और पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए थे। प्रमुख मार्गों और चौक-चौराहों पर पुलिस बल तैनात रहा। जुलूस के दौरान यातायात व्यवस्था बनाए रखने के साथ असामाजिक तत्वों पर भी नजर रखी गई। एसपी राजेश अग्रवाल, एएसपी, सीएसपी सहित पुलिस अधिकारी और जवान व्यवस्था की निगरानी करते रहे।

## बृजलाल मानिकपुरी बने मानिकपुरी पनिका समाज के जिलाध्यक्ष

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

भारतीय मानिकपुरी पनिका समाज, जिला सरगुजा का पुनर्गठन किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से बृजलाल मानिकपुरी को जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया। उनके मनोनयन पर समाज के वरिष्ठ पदाधिकारियों, सामाजिक प्रतिनिधियों और युवाओं ने खुशी जताते हुए बधाई दी। नवनियुक्त जिलाध्यक्ष बृजलाल मानिकपुरी ने समाज के शीर्ष नेतृत्व और सामाजिक बंधुओं के प्रति आभार जताया। उन्होंने कहा कि उन पर जताए गए विश्वास पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे। समाज को संगठित करना, युवाओं को शिक्षा और रोजगार से जोडना तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करना उनकी प्राथमिकता होगी। बैठक में समाज के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने कहा कि नए नेतृत्व में जिले में सामाजिक एकजुटता और संगठन को मजबूती मिलने की उम्मीद है। जल्द ही कार्यकारिणी का विस्तार कर नए सदस्यों को जिम्मेदारियां सौंपी जाएंगी।

# एसटी भूमि फर्जीवाड़े में 40 लाख के सौदे का आरोपी गिरफ्तार

- प्रतीक्षा बस स्टैंड के पास 6.25 एकड़ तालाब क्षेत्र की जमीन में हेरफेर का मामला
- फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र और वंशावली के आधार पर बैनामा कराने का आरोप

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

प्रतीक्षा बस स्टैंड के पास स्थित तालाब क्षेत्र की अनुसूचित जनजाति की जमीन के फर्जीवाड़े मामले में मणिपुर पुलिस, साइबर सेल और रायपुर पुलिस की संयुक्त टीम ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी आजाद इराकी (43),निवासी मस्जिद मोहल्ला जयनगर, जिला सूरजपुर को रायपुर से पकड़ा है। पुलिस के अनुसार आरोपी ने फर्जी दस्तावेज होने की जानकारी के बावजूद विवादित जमीन का 40 लाख रुपए में सौदा किया था। मामले में शामिल अन्य आरोपी फरार हैं,जिनकी तलाश की जा रही है। कलेक्टर कार्यालय सरगुजा की जांच के आधार पर मणिपुर थाने में दर्ज किया गया है। पुलिस के अनुसार प्रतीक्षा बस स्टैंड के पास खसरा नंबर 3714 में 0.250 हेक्टेयर (0.231 हेक्टेयर) भूमि स्थित है। यह भूमि नगर निगम के मास्टर प्लान-2021 तथा शासकीय तालाब सूची में दर्ज 6.25 एकड़ तालाब क्षेत्र का हिस्सा है। स्थानीय लोग इसका उपयोग निस्तारी, स्नान और छठ पूजा सहित अन्य सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए करते रहे हैं। जांच में सामने आया कि वर्ष 1954-55 से पहले के राजस्व रिकॉर्ड में उक्त भूमि अनुसूचित जनजाति वर्ग के भू-स्वामी जैलाल पिता बोधन गोड़ के नाम दर्ज थी। आरोप है कि आरोपियों ने मिलीभगत कर फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र तैयार कराया। इसके बाद जयलाल पिता देवराम नामक दूसरे व्यक्ति की वंशावली और नामांतरण रिकॉर्ड का दुरुपयोग कर खुद को जमीन का वारिस बताया गया। पुलिस के अनुसार इसके बाद विक्रेता चंद्रशेखर यादव और अन्य सह-खातेदारों के साथ मिलकर अनुसूचित जनजाति की भूमि का गैर-अनुसूचित जनजाति के नाम अवैध अंतरण कराया गया और फर्जी बैनामा तैयार किया गया।

**तकनीकी साक्ष्य से रायपुर पहुंची पुलिस :** मामले में धारा 318(4), 338, 336(3), 340(2) और 61(2) के तहत अपराध दर्ज कर विवेचना शुरू की गई। डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा राजेश अग्रवाल के निर्देश पर मणिपुर थाना और साइबर सेल की संयुक्त टीम गठित की गई। विवेचना के दौरान आरोपी आजाद इराकी के संबंध में तकनीकी जानकारी मिलने के बाद पुलिस टीम ने रायपुर पुलिस के सहयोग से उसके संभावित ठिकाने पर दबिश दी और उसे हिरासत में लिया। पूछताछ में पुलिस के अनुसार आरोपी ने फर्जी और कूटरचित दस्तावेज होने की जानकारी के बावजूद 40 लाख रुपए में विवादित जमीन का सौदा करने की बात स्वीकार की। पर्याप्त साक्ष्य मिलने पर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस फरार सह-आरोपियों की तलाश कर रही है और मामले की आगे की जांच जारी है।

**कार्रवाई में ये रहे शामिल :** डीएसपी रायपुर क्राइम संजय सिंह, मणिपुर थाना प्रभारी सीपी तिवारी,रायपुर उप निरीक्षक गेंन्दूराम नवरंग,साइबर सेल प्रभारी एएसआई अजीत मिश्रा,एएसआई अनिल पाण्डेय,प्रधान आरक्षक जयदीप सिंह,आरक्षक मनीष सिंह,रमेश राजवाड़े, उमाशंकर साहू,अनिल सिंह तथा रायपुर के आरक्षक संदीप सिंह व महिपाल सिंह।

CMYK

# नगरपालिका का चुनाव या 2028 की बिसात?

## बैकुंठपुर में कांग्रेस के एक टिकट पर कई सियासी निशाने

### बैकुंठपुर में कांग्रेस का चेहरा कौन? नगरपालिका की कुर्सी के साथ 2028 की बिसात भी...

**नगरपालिका की कुर्सी पर किसका चेहरा? कांग्रेस में दावेदार कम, अंदरखाने सियासी हलचल तेज**

बैकुंठपुर में कांग्रेस का टिकट किसे? अशोक की दूरी, आशीष की दावेदारी और अंबिका के नाम पर मंथन...

नगरपालिका चुनाव या विधानसभा की तैयारी? बैकुंठपुर कांग्रेस में चेहरे को लेकर बढ़ा सियासी पेच

कांग्रेस में अध्यक्ष पद का चेहरा कौन? बैकुंठपुर नगरपालिका से तय हो सकती है आगे की सियासी दिशा

अशोक ने बनाई दूरी, आशीषों ने बढ़ाई दावेदारी, अंबिका के नाम पर भी चर्चा...कांग्रेस में कौन बनेगा चेहरा?

बैकुंठपुर नगरपालिका में कांग्रेस का 'चेहरा' तलाश रही पार्टी, दावेदारी से ज्यादा रणनीति पर नजर...

**इस बार पार्षद नहीं, जनता चुनेगी अध्यक्ष...बैकुंठपुर में कांग्रेस के चेहरे पर सबसे बड़ा सियासी सवाल**

-रवि सिंह-

**बैकुंठपुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।**

कोरिया जिले का नगरीय निकाय चुनाव इस बार काफी दिलचस्प होने वाला है, दिलचस्प इसलिए भी कि भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस दोनों ही ऐसे चेहरे पर दावा खेलना चाह रही हैं,जिस पर जनता भरोसा करे और जीत पार्टी की झोली में आ जाए,लेकिन बैकुंठपुर नगरपालिका में कांग्रेस के लिए यह चुनाव सिर्फ अध्यक्ष की कुर्सी तक सीमित नहीं दिखाई दे रहा,अध्यक्ष पद के चेहरे के बहाने पार्टी के भीतर आगामी विधानसभा चुनाव की बिसात भी बिछती नजर आ रही है। कांग्रेस में दावेदारों की संख्या भले ही बहुत ज्यादा नहीं है, लेकिन अंदरखाने की हलचल काफी ज्यादा है,हर नाम के साथ अलग राजनीतिक गणित जुड़ा हुआ है, किसी की नजर नगरपालिका पर है तो किसी की नजर आगामी विधानसभा पर, किसी के पास स्थानीय निकाय का अनुभव है तो किसी के पास दो दशक का संगठनात्मक अनुभव,किसी के पास विधायक के रूप में काम करने का अनुभव है तो किसी के सामने पिछले विधानसभा चुनाव का परिणाम है,और इस बार चुनाव की व्यवस्था बदल जाने से यह पूरा गणित और भी महत्वपूर्ण हो गया है, पिछली बार जनता ने पार्षद चुने थे और उन्हीं पार्षदों ने अध्यक्ष चुना था, इस बार जनता सीधे नगरपालिका अध्यक्ष चुनेगी,यही सबसे बड़ा फर्क है और यही फर्क इस चुनाव में उम्मीदवारों के चयन से लेकर पूरी चुनावी रणनीति तक को बदलने वाला है, पिछले चुनाव में कांग्रेस के 11,भाजपा के 7 और दो निर्दलीय पार्षद चुने गए थे,इसके बावजूद अध्यक्ष पद कांग्रेस के हाथ नहीं आया, अध्यक्ष पद के चुनाव में बराबरी की स्थिति बनी और पर्ची से भाजपा की नविता शिवहरे अध्यक्ष बनीं,लेकिन इस बार ऐसा कोई राजनीतिक गणित नहीं होगा,अब अध्यक्ष किसी पार्षद के वोट से नहीं,सीधे जनता के वोट से बनेगा, यानी इस बार पार्टी के लिए उम्मीदवार का चेहरा पहले से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है।

**अशोक जायसवाल...कांग्रेस के पास मजबूत चेहरा,लेकिन नगरपालिका से दूरी**-कांग्रेस के भीतर बैकुंठपुर में जो मजबूत चेहरा माना जाता है,उनमें अशोक जायसवाल का नाम सबसे पहले आता है,आगामी विधान सभा चुनाव में उन्हें विधायक प्रत्याशी के प्रबल दावेदार के रूप में देखा जा रहा है,अशोक जायसवाल नगरपालिका की राजनीति से भी अनजान नहीं हैं,वे स्वयं एक बार नगरपालिका चुनाव लड़ चुके हैं और दूसरी बार अपनी पत्नी को नगरपालिका चुनाव लड़वा चुके हैं,यानी लगातार दो नगरपालिका चुनावों में उनकी प्रत्यक्ष भागीदारी रही है,इसके बावजूद इस बार उन्होंने नगरपालिका चुनाव से दूरी बना ली है और चुनाव लड़ने की मंशा से इनकार कर दिया है, यही बात कांग्रेस के अंदर सबसे ज्यादा चर्चा का विषय बन रही है, जिस चेहरे को आगामी विधानसभा के लिए मजबूत माना जा रहा है,वही चेहरा नगरपालिका चुनाव से बाहर क्यों है? क्या अशोक जायसवाल सीधे विधानसभा की तैयारी करना चाहते हैं? क्या वे नगरपालिका की राजनीति में लगातार दो बार भागीदारी के बाद अब अगली राजनीतिक पारी विधानसभा के लिए देख रहे हैं? या फिर पार्टी की अंदरूनी रणनीति में नगरपालिका और विधानसभा के चेहरों को अलग-अलग रखा जा रहा है? इन सवालों का जवाब फिलहाल सामने नहीं है,लेकिन उनका चुनाव से पीछे हटना कांग्रेस के लिए अध्यक्ष पद का चेहरा तय करने की चुनौती जरूर बढ़ा रहा है।

**अंबिका सिंहदेव...नाम आते ही नगरपालिका से विधानसभा तक पहुंच जाता है सवाल**-चौथा और सबसे पेचीदा नाम है पूर्व विधायक अंबिका सिंहदेव का,अंबिका सिंहदेव विधायक रह चुकी हैं,उनके पास विधानसभा का अनुभव है और पार्टी ने उन्हें पहले भी विधानसभा चुनाव में मौका दिया है,लेकिन उनके राजनीतिक सफर में एक तरफ 2018 की जीत है तो दूसरी तरफ 2023 का विधानसभा परिणाम भी है,2023 में भाजपा के भैयालाल राजवाड़े को 66,866 वोट मिले, जबकि अंबिका सिंहदेव को 41,453 वोट मिले,जीत का अंतर 25,413 वोट रहा,यही परिणाम अब उनकी आगामी राजनीतिक भूमिका को लेकर होने वाली चर्चाओं में बार-बार सामने आता है,लेकिन सवाल सिर्फ 2023 की हार का नहीं है,सवाल यह भी है कि क्या अंबिका सिंहदेव के पास अब भी उतना ही स्थानीय जनाधार है,जितना एक मजबूत विधानसभा दावेदार के लिए जरूरी माना जाता है? आपके दिए राजनीतिक आकलन के मुताबिक,उनके सामने अपनी ही पार्टी के लोगों के साथ भरोसे का सवाल और आम जनता के बीच सीधे संपर्क का सवाल भी है, यही वजह है कि कांग्रेस के भीतर यह चर्चा हो सकती है कि आगामी विधानसभा में जनता उन्हें किस रूप में स्वीकार करेगी,यह निष्कर्ष किसी सर्वे के सत्यापित परिणाम के रूप में नहीं, बल्कि स्थानीय राजनीतिक चर्चा और आपके दिए आकलन के रूप में देखा जाना चाहिए।

### आशीष यादव उर्फ लाला–दमखम के साथ दावेदारी, लेकिन भरोसा किसका?-

अशोक जायसवाल के बाद कांग्रेस में जो नाम मजबूती से सामने आता है, वह है वर्तमान नगरपालिका उपाध्यक्ष आशीष यादव उर्फ लाला का, आशीष यादव दमखम के साथ अध्यक्ष पद की दावेदारी ठोक रहे हैं, मौजूदा नगरपालिका उपाध्यक्ष होने के कारण उनके पास स्थानीय निकाय की राजनीति का प्रत्यक्ष अनुभव भी है, परिषद की कार्यप्रणाली, वार्डों की राजनीति और शहर की स्थानीय समस्याओं से उनका सीधा जुड़ाव रहा है, इस बार जब अध्यक्ष का चुनाव सीधे जनता करेगी, तो यह अनुभव उनके लिए राजनीतिक आधार बन सकता है, लेकिन कांग्रेस के भीतर असली सवाल यही है की क्या पार्टी आशीष यादव पर भरोसा करेगी? क्या संगठन उन्हें पूरे शहर का चेहरा मानकर मैदान में उतारेगा? क्या उनके नाम पर कांग्रेस के सभी गुट एक साथ खड़े होंगे? या फिर अध्यक्ष पद के टिकट को लेकर अंदरखाने कोई दूसरा समीकरण तैयार होगा? यही असमंजस फिलहाल कांग्रेस के भीतर दिखाई दे रहा है, क्योंकि प्रत्यक्ष चुनाव में अध्यक्ष प्रत्याशी को सिर्फ अपने समर्थकों का नहीं, पूरे शहर का चुनाव लड़ना है, इसलिए पार्टी को यह देखना होगा कि जिस व्यक्ति को टिकट दिया जाए, उसके साथ संगठन के साथ-साथ जनता का कितना जुड़ाव है।

### आशीष डाबरे–छात्र संघ से शुरू हुई राजनीति, करीब 20 साल का अनुभव-

तीसरा बड़ा नाम आशीष डाबरे का है, आशीष डाबरे राजनीति के पुराने चेहरे हैं, छात्र संघ के समय से राजनीति कर रहे हैं और उनका राजनीतिक अनुभव करीब 20 साल का हो चुका है, राजनीति के साथ संगठन में भी उन्होंने लंबा समय बिताया है, यानी अनुभव के मामले में उनके सामने कोई कमी नहीं है, लेकिन उनके सामने भी अपनी तरह का राजनीतिक असमंजस है, अंदरखाने की चर्चा यह है कि यदि टिकट के लिए बहुत ज्यादा जोर लगाया गया और संगठन के भीतर के कुछ लोगों को यह पसंद नहीं आया, तो आगे चलकर नुकसान अपने ही संगठन के लोगों से हो सकता है, राजनीति में यह कोई नई बात नहीं है, टिकट की लड़ाई कई बार चुनाव से पहले ही संगठन के भीतर रिश्तों और समीकरणों को बदल देती है, इसी वजह से आशीष डाबरे ने भी काफी हद तक फैसला पार्टी के ऊपर छोड़ रखा है, पार्टी क्या तय करती है, वही अंतिम होगा, यानी लगभग दो दशक के राजनीतिक अनुभव के बावजूद वे टिकट की लड़ाई को टकराव में बदलने के बजाय संगठन के निर्णय का इंतजार कर रहे हैं।

### अंबिका सिंहदेव के सामने दो रास्ते–विधानसभा या नगरपालिका?

यहीं से नगरपालिका चुनाव कांग्रेस के लिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, एक राजनीतिक संभावना यह है कि यदि कांग्रेस अंबिका सिंहदेव को फिर से सक्रिय राजनीतिक भूमिका देना चाहती है तो बैकुंठपुर नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव उनके लिए एक रास्ता बन सकता है, क्यों? क्योंकि उन्होंने अब तक विधानसभा जैसे बड़े चुनाव लड़े हैं, लेकिन स्थानीय निकाय का प्रत्यक्ष चुनाव नहीं लड़ा है, नगरपालिका चुनाव उन्हें छोटे और सीधे स्थानीय चुनाव का अनुभव दे सकता है,यह चुनाव वार्ड-वार्ड की राजनीति है,यह घर-घर संपर्क का चुनाव है,यह स्थानीय समस्याओं पर सीधे जवाब देने का चुनाव है, और सबसे महत्वपूर्ण–इस बार अध्यक्ष का चुनाव सीधे जनता करेगी,ऐसे में यदि अंबिका सिंहदेव नगरपालिका अध्यक्ष पद के लिए मैदान में उतरती हैं और जीतती हैं तो उन्हें शहर की राजनीति में दोबारा सक्रिय होने का अवसर मिल सकता है, इसके बाद वह नगरपालिका के जरिए शहर में अपना जनसंपर्क मजबूत कर सकती हैं और आगे विधानसभा की राजनीति के लिए अपनी जमीन तैयार कर सकती हैं,यही वह राजनीतिक सोच है, जिसकी वजह से कांग्रेस के भीतर अंबिका सिंहदेव को नगरपालिका अध्यक्ष पद का चेहरा बनाने की चर्चा महत्वपूर्ण हो जाती है।

**क्या नगरपालिका चुनाव अंबिका सिंहदेव के लिए राजनीतिक पुनर्निर्माण का रास्ता बन सकता है?**-यदि कांग्रेस शहर को एकजुट करने की रणनीति बनाती है तो अंबिका सिंहदेव को नगरपालिका अध्यक्ष पद का चेहरा बनाने के पीछे एक तर्क यह भी हो सकता है कि उन्हें फिर से जनता के बीच सक्रिय भूमिका दी जाए,विधानसभा चुनाव में मिली हार के बाद सीधे अगले विधानसभा चुनाव की तरफ जाने के बजाय नगरपालिका जैसे स्थानीय चुनाव के माध्यम से शहर में काम करने का अवसर मिलना उनके लिए अलग राजनीतिक स्थिति पैदा कर सकता है, जीत की स्थिति में उनके पास नगरपालिका सरकार चलाने का अनुभव होगा,शहर के मुद्दों पर सीधे काम करने का मौका होगा,वार्ड स्तर पर संगठन को सक्रिय करने का अवसर होगा,और जनता के साथ रोजमर्रा के संपर्क का राजनीतिक आधार बनेगा,यानी नगरपालिका चुनाव उनके लिए केवल चुनाव नहीं,बल्कि राजनीतिक वापसी की जमीन भी बन सकता है,लेकिन यहां भी अंतिम फैसला जनता का ही होगा।

### लेकिन सर्वे ने बदल दिया तो पूरा गणित?

कांग्रेस यदि आगामी विधानसभा और लोकसभा चुनावों में सर्वे को टिकट चयन का महत्वपूर्ण आधार बनाती है तो पुराने चेहरों की राजनीति के सामने नई चुनौती खड़ी हो सकती है,शहर मतदाताओ के अनुसार कांग्रेस इस बार सर्वे में सामने आने वाले नामों को अधिक महत्व देने की दिशा में आगे बढ़ रही है,ऐसी स्थिति में सवाल यह होगा कि अंबिका सिंहदेव सर्वे में कहां रहती हैं, संभव है कि अंतिम सूची में उनका नाम हो,लेकिन यदि सर्वे की प्राथमिकता शीर्ष नामों को दी जाती है तो उनकी स्थिति पर सवाल खड़े होंगे,और यहीं कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा विरोधाभास है, यदि सर्वे को महत्व देना है तो पुराने टिकटों का आधार कितना निर्णायक होगा? अंबिका सिंहदेव को पहले भी दो बार विधानसभा का टिकट मिल चुका है, यदि आगे भी टिकट उसी राजनीतिक परंपरा के आधार पर तय होता है, तो फिर सर्वे में सामने आने वाले नए चेहरों की भूमिका कमजोर हो जाएगी, इसलिए इस बार कांग्रेस के टिकट चयन पर सबसे ज्यादा नजर रहेगी, सर्वे जीतेगा या पुराना राजनीतिक समीकरण? यह सवाल केवल अंबिका सिंहदेव का नहीं, कांग्रेस के हर संभावित दावेदार का है।

**और अगर अंबिका को नगरपालिका में उतार दिया गया तो?**- यही वह स्थिति है,जिसमें कांग्रेस एक साथ कई राजनीतिक लक्ष्य साध सकती है,अंबिका सिंहदेव को नगरपालिका अध्यक्ष पद पर उतारना उन्हें शहर में सक्रिय करेगा,उन्हें स्थानीय निकाय का अनुभव देगा,उन्हें जनता के बीच रोजाना काम करने का अवसर देगा,और यदि वह जीतती हैं तो कांग्रेस के पास शहर में एक अनुभवी राजनीतिक चेहरा होगा,यही कारण है कि अंबिका सिंहदेव का बैकुंठपुर नगरपालिका चुनाव लड़ना कुछ लोगों के लिए आगामी विधानसभा की तुलना में अधिक व्यावहारिक राजनीतिक विकल्प के रूप में देखा जा रहा है,लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है,यदि वे नगरपालिका चुनाव हारती हैं तो उनकी राजनीतिक स्थिति पर नई चर्चा शुरू होगी,इसलिए यह फैसला जितना बड़ा अवसर है, उतनी ही बड़ी राजनीतिक परीक्षा भी।

**पिछली बार पार्षदों का खेल था,इस बार जनता का फैसला**- यही इस चुनाव का सबसे बड़ा फर्क है, पिछली बार कांग्रेस के 11 पार्षद जीते थे और भाजपा के 7,इसके बावजूद अध्यक्ष कांग्रेस का नहीं बन पाया,क्रॉस वोटिंग के बाद मुकाबला बराबरी पर पहुंचा और पर्ची से भाजपा की नविता शिवहरे अध्यक्ष बनीं,उस समय अध्यक्ष पद के लिए पार्षदों का गणित सबसे महत्वपूर्ण था,इस बार वह गणित नहीं है, इस बार जनता सीधे अध्यक्ष चुनेगी, अब किसी पार्षद को अपने पक्ष में करने से अध्यक्ष नहीं बनेगा,अब किसी पार्षद की नाराजगी से अध्यक्ष पद का चुनाव नहीं पलटेगा,अब बराबरी होने पर पर्ची निकलने का इंतजार नहीं होगा,अब सीधे जनता के वोट गिने जाएंगे,और इसलिए इस बार अध्यक्ष पद का उम्मीदवार ही पूरे शहर में पार्टी का सबसे बड़ा चेहरा होगा।

**यही वजह है कि कांग्रेस के सामने टिकट से ज्यादा चेहरे की चुनौती**-कांग्रेस को इस बार ऐसा उम्मीदवार चाहिए जो केवल पार्टी के भीतर स्वीकार्य न हो,बल्कि पूरे शहर में जनता के सामने खड़ा हो सके,उसे अपने वार्ड से बाहर निकलकर पूरे नगरपालिका क्षेत्र में जाना होगा,उसे हर वर्ग से संपर्क करना होगा, उसे अपने पुराने राजनीतिक रिकॉर्ड का जवाब देना होगा, उसे शहर की समस्याओं पर बात करनी होगी,और जनता को यह भरोसा दिलाना होगा कि नगरपालिका की कमान उसके हाथ में सुरक्षित रहेगी,इसलिए इस बार किसी नेता का केवल पार्टी में मजबूत होना पर्याप्त नहीं होगा,उसे जनता में भी मजबूत दिखाई देना होगा,यही वजह है कि कांग्रेस के भीतर अध्यक्ष पद का चेहरा तय करना इस बार सबसे कठिन फैसला हो सकता है।

**अंदरखाने नगरपालिका, निशाने पर विधानसभा**- बैकुंठपुर की राजनीति में इस समय सबसे दिलचस्प बात यही है कि सामने नगरपालिका चुनाव है,लेकिन चर्चा विधानसभा की हो रही है,अशोक जायसवाल की विधानसभा दावेदारी की चर्चा है, अंबिका सिंहदेव की भविष्य की भूमिका पर सवाल हैं,आशीष यादव नगरपालिका के अनुभव के साथ दावेदारी कर रहे हैं, आशीष डाबरे करीब 20 साल के राजनीतिक अनुभव के साथ संगठन के फैसले का इंतजार कर रहे हैं,इन सबके बीच कांग्रेस को एक ऐसा चेहरा चुनना है जो सिर्फ चुनाव लड़े नहीं,बल्कि पूरे शहर को अपने पीछे खड़ा कर सके।

**अब असली सवाल—कांग्रेस किसे मैदान में उतारेगी?- बैकुंठपुर नगरपालिका चुनाव में कांग्रेस के सामने फिलहाल चार प्रमुख राजनीतिक चेहरे दिखाई दे रहे हैं—**

- **अशोक जायसवाल**-मजबूत स्थानीय चेहरा,आगामी विधानसभा के प्रबल दावेदारों में नाम,लेकिन नगरपालिका चुनाव से दूरी।
- **आशीष यादव उर्फ लाला**-वर्तमान नगरपालिका उपाध्यक्ष, स्थानीय निकाय का अनुभव और दमखम के साथ दावेदारी।
- **आशीष डाबरे** — छात्र राजनीति से शुरुआत, करीब 20 साल का राजनीतिक अनुभव और संगठन में लंबी सक्रियता।
- **अंबिका सिंहदेव** — पूर्व विधायक, विधानसभा का अनुभव, 2023 में 25,413 मतों से हार और अब शहर की राजनीति में दोबारा सक्रिय होने की संभावित राह, चारों के सामने अलग-अलग परिस्थितियां हैं, चारों का राजनीतिक रास्ता अलग है,और चारों के नाम के साथ कांग्रेस की आगे की राजनीति का अलग-अलग गणित जुड़ा हुआ है।

**फैसला चाहे जिसका हो,इस बार परीक्षा सीधे जनता की होगी**-बैकुंठपुर नगरपालिका में इस बार सबसे बड़ा बदलाव चुनाव प्रक्रिया का है, पिछली बार जनता ने पार्षद चुने थे और पार्षदों के राजनीतिक समीकरण से अध्यक्ष बना था,इस बार जनता पार्षद भी चुनेगी और अध्यक्ष भी सीधे चुनेगी, इसलिए इस बार न सिर्फ राजनीतिक दलों को,बल्कि दावेदारों को भी अपनी रणनीति बदलनी होगी, अब अध्यक्ष का चुनाव बंद कमरे के राजनीतिक समीकरण से नहीं होगा,अब फैसला घर-घर की दस्तक,जनता के भरोसे और सीधे वोट से होगा, और कांग्रेस के लिए यही सबसे बड़ा सवाल है कि वह जनता के सामने कौन सा चेहरा रखती है, क्योंकि इस बार अध्यक्ष पद का उम्मीदवार सिर्फ नगरपालिका अध्यक्ष बनने की लड़ाई नहीं लड़ेगा,वह बैकुंठपुर शहर में कांग्रेस के अगले राजनीतिक अध्याय का चेहरा भी बन सकता है, यही कारण है कि बैकुंठपुर नगरपालिका चुनाव की तारीख और प्रत्याशियों के ऐलान से पहले ही कांग्रेस के भीतर राजनीतिक हलचल तेज है, नगरपालिका की कुर्सी सामने है,लेकिन अंदरखाने विधानसभा की बिसात बिछ रही है, अब देखना यह है कि कांग्रेस इस बिसात पर किसे आगे करती है, किसे पीछे करती है और किस चेहरे के हाथ में बैकुंठपुर शहर की अगली राजनीतिक कमान देने का फैसला करती है, अंतिम फैसला संगठन करेगा, लेकिन इस बार जीत-हार की मुहर सीधे बैकुंठपुर की जनता लगाएगी।

### अशोक जायसवाल को फिर नगरपालिका में उतारने की चर्चा क्यों?-

अब बात आती है सबसे अलग राजनीतिक संभावना की, यदि कांग्रेस के भीतर अंबिका सिंहदेव के लिए आगामी विधानसभा का रास्ता तैयार करने की रणनीति बनती है तो अशोक जायसवाल की भूमिका पर भी सवाल उठेगा, क्योंकि अशोक जायसवाल को आगामी विधानसभा के लिए मजबूत दावेदार माना जा रहा है, ऐसे में अंदरखाने यह राजनीतिक चर्चा भी हो सकती है कि यदि अशोक जायसवाल को किसी रणनीति के तहत फिर से नगरपालिका अध्यक्ष का चुनाव लड़ाया जाए तो उनकी विधानसभा दावेदारी पर असर पड़ सकता है, यहां दो संभावनाएं बनती हैं, यदि वे नगरपालिका चुनाव जीतते हैं तो उनकी स्थानीय राजनीतिक पकड़ और मजबूत होगी, यदि परिणाम उनके पक्ष में नहीं रहता तो वही परिणाम उनकी भविष्य की विधानसभा दावेदारी पर राजनीतिक चर्चा का आधार बन सकता है, इसलिए उन्हें नगरपालिका में उतारना या न उतारना भी सिर्फ नगरपालिका का फैसला नहीं होगा।

### एक टिकट से कई लोगों का भविष्य तय हो सकता है-

यही बैकुंठपुर नगरपालिका चुनाव का सबसे बड़ा राजनीतिक पहलू है, यदि आशीष यादव को टिकट मिलता है तो यह स्थानीय निकाय के अनुभव को प्राथमिकता देने का संदेश होगा, यदि आशीष डाबरे को टिकट मिलता है तो संगठन और लंबे राजनीतिक अनुभव को महत्व मिलने की बात कही जाएगी, यदि अंबिका सिंहदेव को टिकट मिलता है तो इसे शहर की राजनीति में उनकी वापसी और भविष्य की राजनीतिक जमीन तैयार करने की रणनीति से जोड़कर देखा जाएगा, और यदि किसी रणनीति के तहत अशोक जायसवाल को मैदान में उतारा जाता है तो इसे उनकी विधानसभा दावेदारी के संदर्भ में भी देखा जाएगा, यानी नाम किसी एक का होगा, लेकिन असर कई नेताओं की राजनीति पर पड़ेगा।

# वंदे मातरम् के सामूहिक स्वर से गूंजा चरचा...राष्ट्रभावना से ओतप्रोत हुआ वातावरण

## सरस्वती शिशु मंदिर में 543 भैया-बहनों ने किया सामूहिक गायन,नगर के अन्य विद्यालयों में भी एक ही समय गूंजा राष्ट्रगीत

### अतिथियों ने राष्ट्रप्रेम,एकता और जिम्मेदारी का दिया संदेश

-संवाददाता-
कोरिया/ चरचा,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

अखिल भारतीय विद्या भारती के निर्देशानुसार सरस्वती शिशु मंदिर, चरचा में 'वंदे मातरम्' सामूहिक गायन कार्यक्रम का गरिमामय आयोजन किया गया,कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज में राष्ट्रभक्ति,राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रभावना को जागृत एवं सुदृढ़ करना रहा,कार्यक्रम में चरचा नगर के विभिन्न विद्यालयों के प्राचार्य,शिक्षक-शिक्षिकाएं तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय,चरचा के प्राचार्य राम लखन यादव उपस्थित रहे,कार्यक्रम के संयोजक एवं सरस्वती शिशु मंदिर के व्यवस्थापक राम सागर सिंह रहे,जबकि अध्यक्षता प्रबंध समिति के अध्यक्ष अंचल किशोर राजवाड़े ने की,विशिष्ट अतिथि के रूप में अजय कुमार सिंह,सहसचिव एवं शासकीय अधिवक्ता तथा प्रदीप कुमार तिवारी, कार्यकारिणी सदस्य,सरस्वती शिक्षा संस्थान एवं कोरिया विभाग प्रभारी उपस्थित रहे।

**543 विद्यार्थियों ने एक साथ किया वंदे मातरम् का गायन**-कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सरस्वती शिशु मंदिर चरचा के 543 भैया-बहनों द्वारा एक साथ वंदे मातरम् का सामूहिक गायन रहा, निर्धारित समय पर विद्यालय के विद्यार्थी एक साथ खड़े हुए और एक स्वर में वंदे मातरम् का गायन किया, सामूहिक गायन के दौरान विद्यालय परिसर राष्ट्रभक्ति के भाव से गूंज उठा,इसी क्रम में चरचा नगर के अन्य विद्यालयों में भी एक ही समय पर सामूहिक गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया,हिंद विद्यालय के 410 तथा स्वामी आत्मानंद विद्यालय के 205 विद्यार्थियों ने इसमें सहभागिता की,इसके अलावा ऑक्सफोर्ड विद्यालय,स्वामी रामदास स्कूल और वैष्णवी पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी भी सरस्वती शिशु मंदिर पहुंचकर कार्यक्रम में सहभागी बने।

**मुख्य अतिथि राम लखन यादव ने राष्ट्रप्रेम को जीवन में उतारने का किया आह्वान**-कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राम लखन यादव ने विद्यार्थियों को राष्ट्र के प्रति सम्मान,अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना को अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया,उन्होंने कहा कि राष्ट्रभावना केवल किसी विशेष अवसर पर व्यक्त करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए,बल्कि विद्यार्थियों के दैनिक व्यवहार,शिक्षा और सामाजिक जिम्मेदारियों में भी दिखाई देनी चाहिए,उन्होंने विद्यार्थियों से अपने अध्ययन के प्रति गंभीर रहने,अनुशासन का पालन करने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने का आह्वान किया,उनके अनुसार विद्यार्थी देश का भविष्य हैं और उनके भीतर विकसित होने वाली सोच एवं संस्कार आगे चलकर समाज और राष्ट्र के निर्माण में भूमिका निभाते हैं।

**अजय कुमार सिंह ने एकता और जिम्मेदारी पर दिया जोर**-विशिष्ट अतिथि अजय कुमार सिंह ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व से अवगत कराया,उन्होंने कहा कि अलग-अलग विद्यालयों के विद्यार्थियों का एक साथ आकर वंदे मातरम् का गायन करना सामूहिकता और एकता की भावना को प्रदर्शित करता है,उन्होंने विद्यार्थियों से शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार, अनुशासन और सामाजिक चेतना को भी अपने जीवन में स्थान देने की बात कही,उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति सम्मान केवल शब्दों में नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करने से भी प्रकट होता है।

**प्रदीप कुमार तिवारी ने विद्यार्थियों को संस्कार और राष्ट्रचेतना से जोड़ा**-विशिष्ट अतिथि प्रदीप कुमार तिवारी ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि विद्यार्थियों में राष्ट्रभावना और सामाजिक चेतना का विकास शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा है,उन्होंने सामूहिक कार्यक्रमों को विद्यार्थियों में एकता, अनुशासन और सहभागिता की भावना विकसित करने वाला माध्यम बताया,उन्होंने कहा कि विद्यालय केवल पाठ्यक्रम की शिक्षा देने का स्थान नहीं,बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और संस्कार निर्माण का केंद्र भी है, ऐसे आयोजनों के माध्यम से बच्चों को देश, समाज और अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया जा सकता है।

### अंचल किशोर राजवाड़े ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जताया आभार

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रबंध समिति के अध्यक्ष अंचल किशोर राजवाड़े ने विभिन्न विद्यालयों से आए प्राचार्यों, शिक्षकों और विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आयोजन में सहभागिता के लिए आभार व्यक्त किया,उन्होंने कहा कि विभिन्न विद्यालयों की सामूहिक भागीदारी से कार्यक्रम का उद्देश्य और अधिक व्यापक हुआ,कार्यक्रम के संयोजक एवं विद्यालय के व्यवस्थापक राम सागर सिंह ने आयोजन की रूपरेखा और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सभी अतिथियों एवं सहभागी विद्यालयों के प्रति धन्यवाद व्यक्त किया।

### एक समय,एक स्वर और एक भाव

कार्यक्रम में विभिन्न विद्यालयों की सहभागिता ने इसे सामूहिक स्वरूप प्रदान किया, सरस्वती शिशु मंदिर के 543,हिंद विद्यालय के 410 और स्वामी आत्मानंद विद्यालय के 205 विद्यार्थियों सहित अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की सहभागिता से चरचा नगर में एक साथ राष्ट्रभावना का संदेश पहुंचा, आयोजकों के अनुसार कार्यक्रम का उद्देश्य केवल सामूहिक रूप से 'वंदे मातरम्' का गायन करना नहीं था,बल्कि विद्यार्थियों में राष्ट्रप्रेम,राष्ट्रीय एकता, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करना भी था,कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थी,शिक्षक एवं अतिथि एक साथ मौजूद रहे,सामूहिक गायन के समापन के बाद भी विद्यालय परिसर में उत्साह का वातावरण बना रहा, आयोजन ने विद्यार्थियों को एक साथ आने, एक स्वर में गायन करने और सामूहिक सहभागिता के माध्यम से राष्ट्र के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर दिया।

# चक्रधर समारोह 2026 में कोरिया के आयुष नामदेव ने मचाई धूम,सुरों से जीता रायगढ़ का दिल

## बॉलीवुड सिंगर कविता कृष्णमूर्ति के साथ शानदार समापन,वित्त मंत्री ओपी चौधरी और सांसद देवेंद्र सिंह ने स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित




-संवाददाता-
कोरिया/बैकुंठपुर,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ के प्रतिष्ठित चक्रधर समारोह 2026 के समापन अवसर पर कोरिया जिले के युवा गायक आयुष नामदेव ने अपनी शानदार गायकी से ऐसी छाप छोड़ी कि रायगढ़ का पूरा पंडाल उनके सुरों से गूंज उठा, समारोह के समापन कार्यक्रम में आयुष ने अपनी आवाज और दमदार मंचीय प्रस्तुति से दर्शकों का दिल जीत लिया। उनके साथ मशहूर बॉलीवुड गायिका कविता कृष्णमूर्ति की प्रस्तुति ने समारोह के समापन को खास बना दिया। आयुष के मंच पर पहुंचते ही दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया,इसके बाद उन्होंने सूफी, गजल, बॉलीवुड के लोकप्रिय गीतों,पुराने-नए नगमों के साथ छत्तीसगढ़ी गीतों की प्रस्तुतियां देकर संगीत की विविधता का रंग बिखेरा,उनकी प्रस्तुति के दौरान दर्शकों में खासा उत्साह नजर आया और पूरा पंडाल उनके गीतों पर झूमता दिखाई दिया।

**एक मंच पर संगीत की कई विधाओं का संगम**-आयुष नामदेव की प्रस्तुति की खासियत यह रही कि उन्होंने अपनी गायकी में अलग-अलग संगीत विधाओं को शामिल किया,सूफियाना अंदाज से लेकर गजल,बॉलीवुड गीत और छत्तीसगढ़ी गीतों तक उन्होंने अपनी आवाज का अलग रंग प्रस्तुत किया,रायगढ़ में मौजूद संगीत प्रेमियों के लिए यह प्रस्तुति इसलिए भी खास रही कि एक ही मंच पर उन्हें अलग-अलग अंदाज के गीत सुनने का अवसर मिला,आयुष ने अपनी प्रस्तुति के दौरान मंच पर मौजूद दर्शकों से संवाद भी कायम रखा और गीतों के साथ माहौल को लगातार जीवंत बनाए रखा।

**मंच पर मिला सम्मान**-आयुष नामदेव की प्रस्तुति से प्रभावित होकर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओपी चौधरी और धर्मजयगढ़ के सांसद देवेंद्र सिंह ने उन्हें मंच पर स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया, यह सम्मान आयुष के लिए विशेष उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है, चक्रधर समारोह जैसे प्रतिष्ठित सांस्कृतिक मंच पर प्रस्तुति देने और समारोह के समापन कार्यक्रम में सम्मानित होने से कोरिया जिले के संगीत प्रेमियों और उनके प्रशंसकों में भी उत्साह है।

**सोशल मीडिया पर भी छाया आयुष का सुर**-समारोह में आयुष की प्रस्तुति का असर मंच तक ही सीमित नहीं रहा, उनके कार्यक्रम के वीडियो और रील्स सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से प्रसारित हो रहे हैं,इंस्टाग्राम और फेसबुक पर आयुष की प्रस्तुति से जुड़े वीडियो को दर्शकों द्वारा साझा किया जा रहा है,कई सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं और इन्फ्लुएंसर्स द्वारा भी उनकी प्रस्तुति के वीडियो पोस्ट किए जाने की बात सामने आई है,उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन वीडियो को बड़ी संख्या में लोग देख रहे हैं और आयुष की गायकी की सराहना कर रहे हैं,सोशल मीडिया पर मिल रही प्रतिक्रिया ने आयुष की इस प्रस्तुति को समारोह के मंच से आगे नए दर्शकों तक पहुंचाने का काम किया है।

**कोरिया की प्रतिभा ने प्रदेश के मंच पर बनाई पहचान**- चक्रधर समारोह 2026 में आयुष नामदेव की प्रस्तुति को कोरिया जिले की युवा प्रतिभा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है, छोटे शहर और जिले से निकलकर प्रदेश के बड़े सांस्कृतिक मंच पर अपनी पहचान बनाना किसी भी कलाकार के लिए महत्वपूर्ण पड़ाव होता है, आयुष ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से न केवल अलग-अलग संगीत शैलियों को एक साथ प्रस्तुत किया, बल्कि अपनी आवाज और मंचीय आत्मविश्वास से दर्शकों के बीच पहचान भी बनाई, समारोह में मिली सराहना और सम्मान ने उनकी संगीत यात्रा में एक और महत्वपूर्ण अध्याय जोड़ दिया है, चक्रधर समारोह 2026 के मंच से निकली आयुष नामदेव की आवाज अब सोशल मीडिया के जरिए भी नए श्रोताओं तक पहुंच रही है, कोरिया से रायगढ़ तक उनकी इस प्रस्तुति ने युवा कलाकारों की प्रतिभा और संभावनाओं को एक बार फिर सामने ला दिया है।

# पांडवपारा खदान में फर्जी BTC के सहारे मजदूरों को रिप्लेसर के रूप में काम कराने का आरोप

## शिकायत में 20 से 25 हजार रुपये लेकर फर्जी बीटीसी तैयार कराने का दावा

### 12 दिन के बीटीसी पर काम कराने और 48 दिन के अनुभव की शर्त दरकिनार करने का आरोप,निष्पक्ष जांच की मांग

-संवाददाता-
पटना/पांडवपारा,25 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।

झिलमिली सह क्षेत्र के पांडवपारा खदान में मजदूरों से जुड़े दस्तावेजों और रिप्लेसर के रूप में काम कराने की व्यवस्था को लेकर गंभीर शिकायत सामने आई है, 25 सितंबर 2026 को की गई लिखित शिकायत में आरोप लगाया गया है कि कुछ मजदूरों को कथित तौर पर केवल 12 दिन के बीटीसी के आधार पर रिप्लेसर के रूप में काम में लगाया जा रहा है, जबकि संबंधित कार्य के लिए 48 दिन के रिकॉर्ड/अनुभव की आवश्यकता बताई गई है, शिकायतकर्ताओं ने आरोपों की निष्पक्ष जांच कर वास्तविक दस्तावेजों के आधार पर कार्रवाई की मांग की है। शिकायत में संबंधित सब एरिया प्रबंधन को संबोधित करते हुए कहा गया है कि पांडवपारा कोलरी खदान में कार्यरत मजदूरों की जानकारी के अनुसार कुछ लोगों को कम अवधि के बीटीसी के आधार पर रिप्लेसर के रूप में काम में लगाया जा रहा है, शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि कुछ लोगों द्वारा पैसे लेकर कथित तौर पर फर्जी बीटीसी तैयार कराए जाने और उसके आधार पर काम दिलाए जाने की व्यवस्था चल रही है।

### 12 दिन के बीटीसी पर रिप्लेसर बनाने का आरोप

शिकायत में कहा गया है कि कुछ मजदूरों को केवल 12 दिन के बीटीसी के आधार पर रिप्लेसर के रूप में काम कराया जा रहा है, जबकि काम के लिए 48 दिन का रिकॉर्ड अथवा अनुभव मांगा जाता है,शिकायतकर्ताओं का आरोप है कि यदि यह व्यवस्था सही पाई जाती है तो इससे निर्धारित प्रक्रिया और पात्रता संबंधी नियमों के पालन पर सवाल खड़े होते हैं, शिकायत में इस बात की भी जांच की मांग की गई है कि जिन मजदूरों को रिप्लेसर के रूप में काम में लगाया गया है, उनके बीटीसी दस्तावेज वास्तविक हैं या नहीं और उनमें दर्ज प्रशिक्षण अथवा कार्य दिवसों का रिकॉर्ड किस आधार पर तैयार किया गया।

### 20 से 25 हजार रुपये लेकर फर्जी बीटीसी बनाने का दावा

शिकायत का सबसे गंभीर हिस्सा कथित रूप से 20 हजार से 25 हजार रुपये लिए जाने से जुड़ा है, शिकायतकर्ताओं ने आरोप लगाया है कि कुछ लोगों से पैसे लेकर फर्जी बीटीसी तैयार कराया जा रहा है और बाद में ऐसे दस्तावेजों को मान्य मानकर संबंधित व्यक्तियों को काम में लगाया जा रहा है, हालांकि,यह आरोप फिलहाल शिकायत में लगाए गए दावों तक सीमित हैं,दस्तावेज में किसी कथित लेनदेन की स्वतंत्र पुष्टि अथवा जांच रिपोर्ट का उल्लेख नहीं है, इसलिए वास्तविक स्थिति सामने लाने के लिए बीटीसी जारी करने वाले रिकॉर्ड,प्रशिक्षण अवधि,भुगतान संबंधी दस्तावेज और रिप्लेसर ड्यूटी से जुड़े अभिलेखों की जांच आवश्यक होगी।

### एक ही व्यक्ति से 12-12 दिन काम कराने का आरोप

शिकायत में यह भी कहा गया है कि कथित रूप से ऐसे बीटीसी के आधार पर लोगों को 12-12 दिन के रिप्लेसर के रूप में लगातार काम कराया जा रहा है,यदि यह व्यवस्था वास्तव में संचालित हो रही है तो यह भी जांच का विषय होगा कि प्रत्येक मजदूर की पात्रता का सत्यापन किस स्तर पर किया गया और ड्यूटी लगाने से पहले उसके दस्तावेजों की जांच किस अधिकारी या जिम्मेदार व्यक्ति ने की,शिकायतकर्ताओं ने आशंका जताई है कि यदि फर्जी अथवा अपूर्ण दस्तावेजों के आधार पर खदान में मजदूरों को कार्य कराया जा रहा है तो इसका असर केवल नियमों के पालन तक सीमित नहीं रहेगा,बल्कि खदान में कार्यरत मजदूरों की सुरक्षा से भी जुड़ा गंभीर विषय बन सकता है।

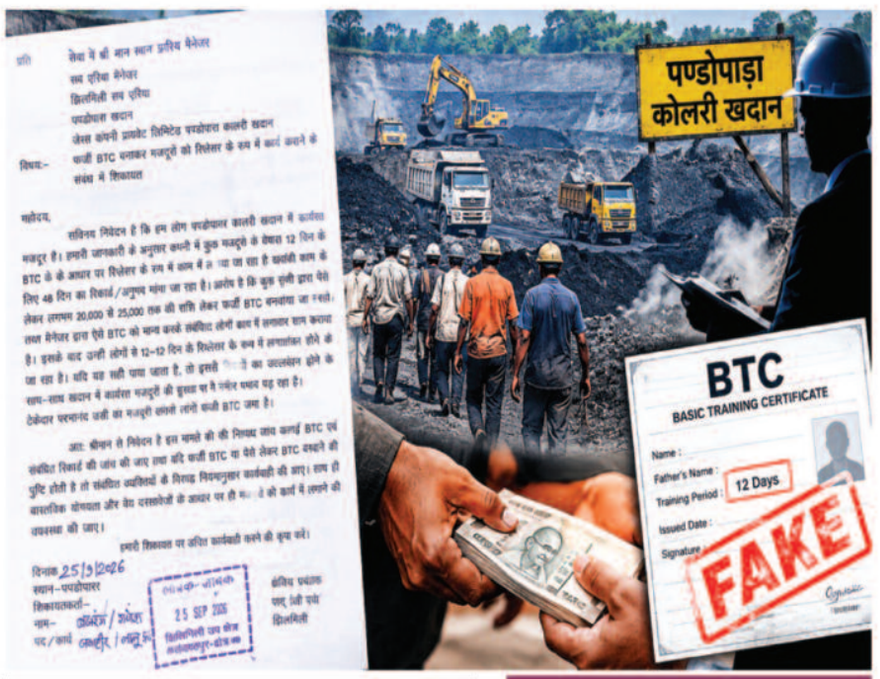






### ठेकेदार की भूमिका की भी जांच की मांग...

शिकायत में ठेकेदार की भूमिका को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं,शिकायतकर्ताओं ने मांग की है कि यह जांच की जाए कि संबंधित मजदूरों के बीटीसी किस माध्यम से तैयार हुए,उन्हें काम में किसने लगाया और ठेकेदार स्तर पर दस्तावेजों का सत्यापन किस प्रकार किया गया, इसके लिए केवल मौखिक जांच के बजाय संबंधित मजदूरों के बीटीसी,प्रशिक्षण रिकॉर्ड, उपस्थिति पंजी,रिप्लेसर ड्यूटी रिकॉर्ड,भुगतान विवरण और ठेकेदार द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों का मिलान किया जाना जरूरी होगा।

### निष्पक्ष जांच और वैध दस्तावेजों के आधार पर काम देने की मांग...

शिकायतकर्ताओं ने संबंधित प्रबंधन से पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है,शिकायत में कहा गया है कि बीटीसी एवं उससे संबंधित रिकॉर्ड की जांच की जाए और यदि फर्जी बीटीसी अथवा पैसे लेकर दस्तावेज तैयार कराने की पुष्टि होती है तो संबंधित लोगों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाए, साथ ही यह मांग भी की गई है कि मजदूरों को वास्तविक योग्यता और वैध दस्तावेजों के आधार पर ही काम में लगाया जाए, ताकि पात्र मजदूरों के अधिकार प्रभावित न हों और खदान में सुरक्षा मानकों के साथ किसी तरह का समझौता न हो।

### अब रिकॉर्ड की जांच से खुलेगा मामला

पांडवपारा खदान से सामने आई शिकायत में लगाए गए आरोपों की अभी स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है, इसलिए किसी व्यक्ति या अधिकारी को दोषी मानने से पहले दस्तावेजों की जांच आवश्यक है,यदि बीटीसी के रिकॉर्ड,प्रशिक्षण अवधि,रिप्लेसर ड्यूटी और भुगतान से संबंधित अभिलेखों में शिकायत में लगाए गए आरोपों की पुष्टि होती है,तो मामला गंभीर हो सकता है,अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि 12 दिन के बीटीसी पर किन लोगों को रिप्लेसर बनाया गया,48 दिन के अनुभव की शर्त वास्तव में क्या है, बीटीसी किस प्रक्रिया से जारी हुए और कथित 20-25 हजार रुपये के लेनदेन का कोई रिकॉर्ड है या नहीं? इन सवालों का जवाब खदान प्रबंधन द्वारा कराई जाने वाली निष्पक्ष जांच और संबंधित दस्तावेजों के परीक्षण से ही सामने आ सकेगा।

## देसी बीट्स पर डायन भाभी ने मचाई तबाही

**यामी गौतम ने डांस से किया सबको फेल**

यामी गौतम की अपकमिंग फिल्म नई नवेली का पहना गाना आउट हो चुका है। जिसमें डायन भाभी ने ऐसा स्वैग दिखाया है कि दर्शक भी तारीफ करते नहीं थके। नेशनल फिल्म अवॉर्ड विजेता यामी गौतम अपनी अपकमिंग हॉरर कॉमेडी ड्रामा फिल्म के साथ बिग स्क्रीन पर तबाही मचाने आ रही हैं। पहली बार यामी बड़े परदे पर डायन की भूमिका निभा रही हैं। नई नवेली का ट्रेलर तो दर्शकों को बेहद पसंद आया ही था, लेकिन अब फिल्म का पहला गाना फैंस की एक्साइटमेंट को दोगुना बढ़ा देगा।

**देसी बीट्स पर यामी गौतम ने दिखाया स्वैग**

नई नवेली से सामने आया पहले गाने में ही देसी बीट्स के साथ भांगड़ा,रैप,क्लासिकल और हिप-हॉप का शानदार मेल देखने को मिला है। गाने का टाइटल है भाभी तबाही। शादी के जश्न के बैकड्रॉप पर सेट 'भाभी तबाही' गाने में नई भाभी की मुंह दिखाई होते हुए दिखाया गया है। जिसमें पहले तो यामी गौतम शांत बैठती हैं,लेकिन जैसे ही उनका देवर उन्हें चैलेंज देका है, वैसे ही वह सेंटर स्टेज ले लेती हैं और उसके बाद हिप हॉप से लेकर देसी डांस और ऐसा भांगड़ा करती हैं कि उनके सामने अच्छे-अच्छे फेल हो जाए। गाने के बारे में बात करते हुए जी. वी. प्रकाश कुमार ने कहा,भाभी तबाही उन गानों में से एक है,जिसमें हम महज साउंड के साथ कुछ मजेदार करना चाहते थे। इसमें एकदम देसी तड़का है,लेकिन साथ ही यह फ्रेश भी लगे और इसमें बहुत सारी एनर्जी भी हो। हम नहीं चाहते थे कि इस गाने के बारे में पहले से ही अंदाजा लगाया जा सके,इसलिए हमने रिदम और अरेंजमेंट के साथ काफी प्रयोग किया है। वायु के गाने के बोल में एक मस्तीभरी एनर्जी है और नीति की आवाज गाने में बहुत सारा कैरेक्टर लेकर आती है।

**कब सिनेमाघरों में रिलीज होगी नई नवेली?**

फिल्म नई नवेली के भाभी तबाही गाने के लिरिक्स जहां वायु ने लिखे हैं,तो वहीं इस शानदार गाने का कंपोजिशन जी.वी.प्रकाश कुमार ने किया है,जो इससे पहले तमिल सिनेमा में कई हिट गानों का संगीत तैयार कर चुके हैं। कुछ ही घंटो पहले रिलीज हुए हॉरर कॉमेडी फिल्म के इस गाने को भी दर्शकों से अच्छा रिस्पांस मिल रहा है।

## हुंकार: द रोअर धर्मगुरु के साम्राज्य से टकराती एक लड़की की कहानी

हुंकारः द रोअर' ताकतवर धर्मगुरु के खिलाफ न्याय की लड़ाई को दिखाती थ्रिलर है। अनीत पड्डा, फातिमा सना शेख और रघुबीर यादव का दमदार अभिनय कहानी को गति देता है, हालांकि कुछ हिस्से जल्दबाजी भरे लगते हैं। हुंकारः द रोअर' का पहला लुक सामने आते ही इस सीरीज ने लोगों का ध्यान खींच लिया था। इसकी एक बड़ी वजह इसकी कास्ट है। 'सैयारा' से अपनी पहचान बनाने वाली अनीत पड्डा और अपनी शानदार अदाकारी के लिए जानी जाने वाली फातिमा सना शेख एक साथ नजर आती हैं। इसके अलावा करण कपाड़िया और नित्या मेहरा जैसे क्रिएटर्स का नाम भी इस प्रोजेक्ट से जुड़ा है। विषय को देखें तो सीरीज में शुरुआत से ही काफी संभावनाएं नजर आती हैं। लेकिन सवाल यही था कि धर्मगुरु, धोखाधड़ी, यौन शोषण और ताकतवर व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई जैसी कहानियां पहले भी पर्दे पर दिखाई जा चुकी हैं, तो 'हुंकार' इसमें नया क्या लेकर आती है? सीरीज इस सवाल का पूरी तरह नया जवाब तो नहीं देती, लेकिन अपनी गति, कलाकारों और रिसर्च के दम पर दर्शकों को बांधे रखने में सफल रहती है। कुछ हिस्सों में

कहानी को ज्यादा विस्तार की जरूरत महसूस होती है,लेकिन कुल मिलाकर यह एक ऐसी थ्रिलर है जो आपको अगला एपिसोड देखने के लिए उत्सुक रखती है।

**क्या है 'हुंकारः द रोअर' की कहानी?**

कहानी की केंद्र में है मीनू रावत, जिसका किरदार अनीत पड्डा ने निभाया है। मीनू एक नाबालिग लड़की है,जो बेहद प्रभावशाली धर्मगुरु सुनील 'बापजी' चकोसी पर यौन शोषण का आरोप लगाती है। बापजी के हजारों अनुयायी हैं और उसके प्रभाव का दायरा सिर्फ धार्मिक गतिविधियों तक सीमित नहीं है। मीनू के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उसके खिलाफ माहौल तैयार होने के बावजूद वह पीछे हटने को तैयार नहीं है। उसके आसपास मौजूद हर व्यक्ति इस मामले को लेकर अपनी राय रखता है, लेकिन मीनू को सिर्फ न्याय चाहिए। मामले की जांच एसीपी जसलीन सिंह सोइन को सौंपी जाती है। फातिमा सना शेख का किरदार निभा रहीं जसलीन के लिए भी यह पहला बड़ा केस है। वह मामले की तह तक जाने की कोशिश करती हैं, लेकिन बापजी के खिलाफ कार्रवाई करना आसान नहीं है। उसके अनुयायी उसे भगवान का दर्जा देते हैं और जैसे ही उसकी गिरफ्तारी की खबर फैलती है, माहौल तनावपूर्ण हो जाता है।

बापजी ने वर्षों में एक विशाल साम्राज्य खड़ा किया है, जिसकी कथित कीमत करीब 10 हजार करोड़ रुपये बताई जाती है। उसके प्रभावशाली नेटवर्क में ऐसे लोग भी हैं, जो उसकी ताकत और प्रतिष्ठा बचाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। इसी बीच पत्रकार अमिताभ सिन्हा की एंट्री होती है। अर्जुन माथुर द्वारा निभाया गया यह किरदार अपनी रिपोर्टिंग के जरिए मामले को लोगों के सामने लाने की कोशिश करता है। वह बापजी के साम्राज्य से जुड़े कई पहलुओं को सामने लाता है। मीनू की तरफ से केस लड़ने के लिए भालेराव सामने आते हैं। मोहम्मद जीशान अय्यूब का यह किरदार मीनू के पक्ष में मजबूती से खड़ा दिखाई देता है। इसके बाद कहानी एक ऐसी लड़की और ताकतवर व्यवस्था के बीच संघर्ष में बदल जाती है, जहां एक तरफ न्याय की मांग है और दूसरी ओर प्रभाव, पैसा और समर्थकों का विशाल नेटवर्क।

**कलाकारों ने संभाली कहानी**

'हुंकार- द रोअर' की सबसे बड़ी ताकत इसकी स्टारकास्ट है। अनीत पड्डा ने मीनू के किरदार में शानदार काम किया है। वह किरदार की कमजोरी और मजबूती दोनों को बेहद सहज तरीके से सामने लाती हैं। मीनू जिस डर, दबाव और मानसिक संघर्ष से गुजरती है, उसमें अनीत का अभिनय बनावटी नहीं लगता। 'सैयारा' के बाद यह सीरीज अनीत पड्डा को खुद को साबित करने का एक और मजबूत मौका देती है। खास बात यह है कि वह मीनू को सिर्फ पीड़ित के रूप में पेश नहीं करतीं। उनके किरदार में अपने फैसले पर कायम रहने की एक शांत ताकत दिखाई देती है। मीनू के पिता के किरदार में राजेश शर्मा भी प्रभावित करते हैं। बेटी के साथ हुई घटना के बाद एक पिता किस तरह के भावनात्मक संघर्ष से गुजरता है,अभिनेता उसे काफी प्रभावी ढंग से दिखाते हैं। खासतौर पर पार्क में भालेराव से उनकी पहली मुलाकात वाला दृश्य भावुक कर देता है। मीनू की मां के किरदार में चारु शंकर भी अच्छा काम करती हैं। वह अपनी बेटी के साथ मजबूती से खड़ी रहती हैं और चाहती हैं कि इस घटना के बावजूद मीनू सामान्य जिंदगी की ओर लौट सके। फातिमा सना शेख ने एसीपी जसलीन के किरदार में संयमित अभिनय किया है। वह किरदार को जरूरत से ज्यादा नाटकीय नहीं बनातीं। जांच के दौरान जसलीन धीरे-धीरे मामले की गंभीरता को समझती हैं और मीनू का साथ देती हैं। रघुबीर यादव के लिए यह किरदार खास है। आमतौर पर उन्हें हल्के-फुल्के और हास्य भूमिकाओं में ज्यादा देखा गया है,लेकिन बापजी के रूप में वह एक अलग अंदाज में नजर आते हैं। उनके हाव-भाव और मौजूदगी किरदार को असहज और डरावना बनाती है। उन्हें हर समय गुस्सा करने या ऊंची आवाज में बोलने की जरूरत नहीं पड़ती,उनका व्यक्तित्व ही बापजी की ताकत दिखाने के लिए काफी है।

मोहम्मद जीशान अय्यूब ने भालेराव के रूप में अपनी छाप छोड़ी है। वह सिर्फ एक वकील की भूमिका नहीं निभाते,बल्कि अपने किरदार में केस के प्रति विश्वास और जुनून भी लेकर आते हैं। खासकर कानूनी बहस वाले दृश्यों में उनका आत्मविश्वास नजर आता है। अर्जुन माथुर भी पत्रकार अमिताभ सिन्हा के रूप में प्रभावी हैं। सच्चाई सामने लाने की कोशिश कर रहे पत्रकार के किरदार में वह स्वाभाविक लगते हैं। राम कपूर का कैमियो भी ध्यान खींचता है। मीनू के साथ उनके संवाद और 'फेक' तथा 'फोजंरी' को लेकर हुई बातचीत वाला हिस्सा खास तौर पर प्रभाव छोड़ता है।

मेकर्स ने संवेदनशील मुद्दे को कैसे संभाला?

करण कपाडिया और नित्या मेहरा ने कहानी को सनसनीखेज बनाने के बजाय जांच और किरदारों पर ज्यादा ध्यान दिया है। मामला नाबालिग लड़की,यौन शोषण,प्रभावशाली धर्मगुरु और ताकतवर सिस्टम से जुड़ा है,इसलिए विषय अपने आप में संवेदनशील है।

## बिग बॉस 20 में बेटी रीति से सवाल करेंगे मनोज तिवारी?

बिग बॉस 20' के घर में रीति तिवारी और काजी तौकीर के बीच चल रहा विवाद लगातार सुर्खियों में है। हालिया टास्क के दौरान रीति द्वारा काजी तौकीर और उदिति सिंह के लिए अभद्र भाषा और अपशब्दों के इस्तेमाल के बाद सोशल मीडिया पर उनकी आलोचना हो रही है। अब खबरें हैं कि आगामी 'वीकेंड का वार' में रीति के पिता और भोजपुरी अभिनेता-गायक मनोज तिवारी शो में नजर आ सकते हैं। हालांकि अभी तक शो के निर्माताओं की ओर से उनके आने की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

दरअसल, कैप्टंसी टास्क के दौरान घरवालों के बीच रैप बैटल हुई थी। इसी दौरान रीति और काजी के बीच विवाद बढ़ गया। रीति ने काजी और उदिति को लेकर कई तीखे और आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया। विवाद इतना बढ़ा कि उदिति भावुक हो गईं। काजी ने भी रीति के व्यवहार पर नाराजगी जाहिर की और कैमरे के सामने सीधे मनोज तिवारी से बेटी को समझाने की अपील की।

काजी ने कहा कि वह मनोज तिवारी का सम्मान करते हैं,लेकिन उन्हें अपनी बेटी का व्यवहार देखना चाहिए। दूसरी ओर रीति ने भी इस विवाद के दौरान अपने पिता का जिक्र किया और दावा किया कि उनके पिता उनके व्यवहार पर गर्व करेंगे। इस पूरे घटनाक्रम के बाद सोशल मीडिया पर बड़ी संख्या में दर्शकों ने प्रतिक्रिया दी और सवाल उठाया कि 'वीकेंड का वार' में सलमान खान इस मामले को किस तरह उठाएंगे। इसी बीच रिपोर्ट सामने आई है कि मनोज तिवारी इस बार 'वीकेंड का वार' में शामिल हो सकते हैं। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि वह अपनी बेटी रीति को सपोर्ट करने के लिए शो में आ सकते हैं और काजी तौकीर के साथ हुए विवाद पर भी अपनी बात रख सकते हैं। वहीं दूसरी रिपोर्ट के मुताबिक उन्हें रीति को समझाने के लिए बुलाए जाने की संभावना है। ऐसे में फिलहाल यह साफ नहीं है कि यदि मनोज शो में आते हैं तो उनका रुख क्या होगा। मनोज तिवारी पहले ही बेटी के 'बिग बॉस' गेम पर प्रतिक्रिया दे चुके हैं। पैपराज़ी से बातचीत में उन्होंने कहा था कि वह शो को ÷डर-डर कर÷ देखते हैं। उनकी यह प्रतिक्रिया भी सोशल मीडिया पर चर्चा में रही। रीति और काजी के बीच इससे पहले भी तीखी बहस हो चुकी है। पिछले 'वीकेंड का वार' में दोनों आमने-सामने आए थे और रीति ने बाद में अपनी एक टिप्पणी के लिए माफी भी मांगी थी। इसके बावजूद दोनों के बीच तनाव खत्म नहीं हुआ और नए टास्क में विवाद फिर बढ़ गया। अब दर्शकों की नजर सलमान खान के आगामी 'वीकेंड का वार' पर है। क्या सलमान रीति से उनकी भाषा को लेकर सवाल करेंगे और क्या मनोज तिवारी भी इस चर्चा का हिस्सा बनेंगे, इसका आधिकारिक जवाब एपिसोड के प्रसारण या चैनल की पुष्टि के बाद ही मिलेगा। फिलहाल मनोज तिवारी की मौजूदगी को लेकर सामने आ रही जानकारी रिपोर्ट्स पर आधारित है,इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

## दूसरी बार पिता बनने के बाद रणवीर सिंह का पहला स्पॉट

बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह पत्नी दीपिका पादुकोण के साथ दूसरे बच्चे के स्वागत के बाद पहली बार सार्वजनिक रूप से नजर आए। इस दौरान अभिनेता का अंदाज पैपराज़ी के बीच चर्चा का विषय बन गया। रणवीर ने कैमरों से बचने के बजाय पैपराज़ी के सामने रुककर पोज दिए और अपने चिर-परिचित अंदाज से सभी का ध्यान खींच लिया। उनका वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आते ही तेजी से वायरल होने लगा। वीडियो में रणवीर सिंह काफी खुश और रिलैक्स नजर आ रहे हैं। जैसे ही वह पैपराज़ी के सामने पहुंचे, फोटोग्राफर्स ने उन्हें कैमरे में कैद करना शुरू कर दिया। रणवीर ने भी मुस्कुराते हुए तस्वीरें खिंचवाईं और अलग-अलग अंदाज में पोज दिए। अभिनेता का यह व्यवहार उनके प्रशंसकों को खूब पसंद आ रहा है। रणवीर सिंह की इस सार्वजनिक मौजूदगी को लेकर सोशल मीडिया पर खासा उत्साह देखने को मिला। इसकी बड़ी वजह यह है कि दीपिका पादुकोण के साथ दूसरे बच्चे के स्वागत के बाद यह उनकी पहली सार्वजनिक झलक बताई जा रही है। ऐसे में फैंस की नजरें अभिनेता पर टिकी हुई थीं। वीडियो सामने आने के बाद प्रशंसक उनके अंदाज और खुशी को लेकर प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण बॉलीवुड की चर्चित जोड़ियों में शामिल हैं। दोनों की निजी जिंदगी से जुड़ी खबरें अक्सर प्रशंसकों के बीच चर्चा में रहती हैं। परिवार में नए सदस्य के आने के बाद से दोनों को लेकर फैंस में उत्सुकता बनी हुई है। हालांकि रणवीर और दीपिका अपनी निजी जिंदगी को लेकर आमतौर पर सीमित जानकारी ही सार्वजनिक करते हैं। इस बीच रणवीर सिंह का पैपराज़ी के साथ सहज अंदाज एक बार फिर लोगों को पसंद आया। कैमरों के सामने उनका एनर्जेटिक और दोस्ताना व्यवहार पहले भी कई बार देखने को मिल चुका है। इस बार भी उन्होंने फोटोग्राफर्स को निराश नहीं किया और रुककर तस्वीरें खिंचवाईं।

## खेल-समाचार

# बारानिका इलांगोवन ने रचा इतिहास

**भारत को एशियन गेम्स में दिलाया इतिहास का सबसे पहला पोल वॉल्ट मेडल**

**नई दिल्ली,25 सितम्बर 2026।** एशियन गेम्स 2026 में बारानिका इलांगोवन ने इतिहास रच दिया है। बारानिका ने शुक्रवार को 4.15 मीटर की ऊंचाई पार करके पोल वॉल्ट में ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया। बारानिका पोल वॉल्ट में मेडल जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बन गई हैं। तमिलनाडु की 29 वर्षीय एथलीट ने कजाकिस्तान की पोलिना इवानोवा के साथ ब्रॉन्ज मेडल साझा किया। इवानोवा ने भी 4.15 मीटर की ऊंचाई पार की थी और उनका काउंटबैक रिकॉर्ड भी एक जैसा था। दोनों एथलीटों का बेस्ट मार्क और सफल प्रयासों की संख्या एक जैसी होने के कारण उनके बीच कोई अंतर नहीं किया जा सका।

**बारानिका ने किया कमाल**

बारानिका ने अपने फाइनल की शुरुआत 3.85 मीटर और 4.00 मीटर की ऊंचाई को आत्मविश्वास के साथ पार करके की। 4.25 मीटर की ऊंचाई की ओर बढ़ने से पहले उन्हें 4.15 मीटर पार करने के लिए दो प्रयासों की जरूरत पड़ी, लेकिन उस ऊंचाई पर तीन असफल प्रयासों के साथ उनका प्रतियोगिता में समाप्त हो गया।

**दो बार तोड़ा नेशनल रिकॉर्ड**

**बारानिका का यह शानदार मेडल उनके लिए एक बेहतरीन साल का समापन है, जिसमें उन्होंने भारतीय महिला पोल वॉल्ट में बार-बार नए मानक स्थापित किए हैं। उन्होंने 2026 में दो बार राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा - पहले मार्च में 4.22 मीटर की ऊंचाई पार की और फिर मई में भुवनेश्वर में इसे बेहतर करते हुए 4.23 मीटर तक पहुंचाया। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया उनके 4.23 मीटर के प्रयास को मौजूदा राष्ट्रीय रिकॉर्ड के रूप में दर्ज करता है।**

**बारानिका की शानदार वापसी**

**तीन बार की राष्ट्रीय आउटडोर चैंपियन बारानिका को 2023 एशियन चैंपियनशिप में कोई मार्क नहीं मिल पाया था,लेकिन उन्होंने इस सीजन में जबरदस्त वापसी की। उन्होंने बेंगलुरु में इंडियन ओपन जंप्स प्रतियोगिता जीतने के लिए एशियन गेम्स के 4.10 मीटर के क्वालिफाइंग स्टैंडर्ड को पार किया और फिर एक और राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाला प्रदर्शन किया। वह 4.23 मीटर के अपने पर्सनल बेस्ट के साथ नागोया पहुंची थीं और अपनी साथी भारतीय और ट्रेनिंग पार्टनर सिंधुश्री गणेश के साथ कड़े घरेलू मुकाबले में शामिल रही थीं, जो एशियन गेम्स में भी हिस्सा ले रही हैं। पूरे सीजन के दौरान उनके प्रदर्शन ने भारतीय महिला पोल वॉल्ट के स्तर को और ऊंचा किया। हालांकि,सिंधुश्री फाइनल में कोई मान्य मार्क दर्ज नहीं कर सकीं और बिना किसी रिकॉर्डेड ऊंचाई के ही प्रतियोगिता से बाहर हो गईं।**

## देहरादून वॉरियर्स बनी महिला यूपीएल 2026 की चैंपियन

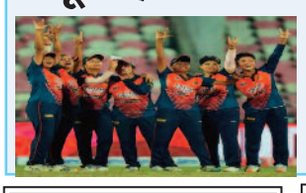

**देहरादून ,25 सितम्बर 2026।** देहरादून वॉरियर्स ने महिला उत्तराखंड प्रीमियर लीग 2026 का खिताब अपने नाम कर लिया है।

**न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,**

**ईश्तहार**

रा0प्र0क्र0-/अ-6/2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदिका आरती सिंह पत्नी विनोद सिंह, उम्र- 49 वर्ष निवासी बोरीपारा अम्बिकापुर,जिला सरगुजा के द्वारा इस आशय का आवेदन प्रस्तुत किया गया है,कि आवेदिका के द्वारा अनावेदकगण राजेश अग्रवाल आ0. स्व0 ओम प्रकाश अग्रवाल वगैरह के संयुक्त स्वामित्व व अधिपत्य की नगर अ0पुर, मोहल्ला सत्तीपारा शीट नं. 03 स्थित नजूल भूमि प्लॉट नंबर 1358/1, 1358/2, 1358/3, 1358/6, 1359/1 रकबा क्रमशः 0.02,0.01$^{1/4}$, 0.00$^{1/2}$, 0.00$^{1/2}$, 0.02 कुल रकबा 0.06$^{1/4}$ एकड़ भूमि को पंजीबद्ध विक्रय पत्र दिनांक 27.08.2026 के माध्यम से क्रय किया गया है। अतः उक्त पंजीबद्ध विक्रय पत्र के आधार पर आवेदिका द्वारा क्रयशुदा भूमि का नामांतरण स्वयं के नाम से किये जाने हेतु पंजीबद्ध विक्रय पत्र की छायाप्रति मय दस्तावेज सहित आवेदन पत्र अन्तर्गत धारा 109, 110 छ.ग. भू-राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत किया गया है।

अतः उक्त संबंध में जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो वे अपना लिखित दावा/आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक- 12/10/2026 तक इस न्यायालय में प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त दावा / अपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक- 25/09/2026 को मेरे न्यायालयीन मुद्रा एवं हस्ताक्षर से जारी किया गया।

सील

**नजूल अधिकारी ,अंबिकापुर**

**न्यायालय तहसीलदार अम्बिकापुर जिला- सरगुजा (छ0ग0)**

**ईश्तहार**

रा0प्र0क्र0-/ब-121/2025-26

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक ललिता राय पति स्व. ब्रजेश्वर व अन्य, निवासी सुभाषनगर तहसील अम्बिकापुर जिला सरगुजा छ.ग. के द्वारा आवेदन प्रस्तुत कर बताया गया है कि आवेदक के स्वामित्व एवं आधिपत्य की भूमि ग्राम सुभाषनगर स्थित खसरा नंबर 222 / 2 251 रकबा क्रमशः 0.140,1.300 हे. स्थित है। उक्त भूमि के राजस्व अभिलेखों में धारणाधिकार में त्रुटिवश शासकीय भूमि अंकित हो गया है, जबकि उक्त भूमि आवेदक के स्वामित्व की भूमि है। आवेदक द्वारा उक्त त्रुटि को सुधार करते हुये भूमि स्वामी हक दर्ज किये जाने हेतु निवेदन किया गया है। उक्त संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति हो तो सुनवाई दिनांक 09/10/2026 के पूर्व स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि अथवा अभिषाक के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर अपना दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेंगा।

आज दिनांक : 18/09/2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा से जारी ।

सील

**तहसीलदार ,अंबिकापुर जिला-सरगुजा(छ.ग.)**

# स्पेन को हराकर बिली जीन किंग कप के फाइनल में पहुंची चेकिया की टीम

**चेक गणराज्य,25 सितम्बर 2026।**बिली जीन किंग कप 2026 के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में चेकिया (चेक गणराज्य) और स्पेन के बीच रोमांचक भिड़ंत हुई। चेकिया ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए शुरुआती दोनों सिंगल्स मैच जीतकर फाइनल में जगह पक्की कर ली है। पहले दो सिंगल्स मैच जीतकर चेकिया की टीम ने स्पेन के खिलाफ 2-0 की अजेय बढ़त हासिल की और फाइनल में जगह बनाई। टेनिस फैंस ने वेटो ओटीटी पर इस मुकाबले का जमकर लुत्फ उठाया।

**पहला मुकाबला : मारी बौजकोवा बनाम जेसिका बाउजस मनेइरो**

सेमीफाइनल का पहला सिंगल्स मैच चेकिया की मारी बौजकोवा और स्पेन की जेसिका बाउजस मनेइरो के बीच खेला गया। इस मैच में मारी बौजकोवा ने अपनी बेहतरीन सर्विस और बेसलाइन खेल के दम पर स्पेन की जेसिका को 6-4, 7-5 से मात दी।

**लिंडा नोस्कोवा बनाम क्रिस्टिना बुक्सा के बीच हुआ दूसरा मैच**

दूसरे सिंगल्स मैच में चेकिया की स्टार खिलाड़ी लिंडा नोस्कोवा का सामना स्पेन की क्रिस्टिना बुक्सा से हुआ। लिंडा नोस्कोवा ने मैच की शुरुआत से ही आक्रामक रुख अपनाया और कोर्ट पर अपना दबदबा बनाए रखा। उन्होंने पहले सेट में बुक्सा को कोई मौका नहीं दिया और आसानी से सेट जीत लिया। दूसरे सेट में क्रिस्टिना बुक्सा ने थोड़ा संघर्ष दिखाया, लेकिन नोस्कोवा ने अपनी बढ़त को बरकरार रखते हुए सीधे सेटों में यह मैच जीतकर अपनी टीम को निर्णायक बढ़त दिला दी। लिंडा नोस्कोवा ने ये सेट 6-2, 7-6 से अपने नाम किया।

# छत्तीसगढ में बारिश कहर...बाढ में फंसी बस,रस्सी बांधकर यात्रियों को निकाला

## गंगरेल के 14 गेट खुले,रायपुर में जलभराव,बस्तर में स्कूल बंद,परीक्षाएं रद्द

**रायपुर,25 सितम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ में लगातार बारिश का दौर जारी है। गरियाबंद में रायपुर से देवभोग जा रही यात्री बस सराई भदर के पास बाढ़ के पानी में फंस गई। नाले में करीब 4 फीट पानी था और दोनों ओर पानी का तेज बहाव था। बस में सवार करीब 50 यात्रियों को पुलिस जवानों और ग्रामीणों ने रस्सी बांधकर यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला। राजधानी रायपुर के भाठागांव, सुंदर नगर,महादेवघाट रोड और विधानसभा क्षेत्र सहित कई इलाकों में जलभराव हो गया है। जगदलपुर के गंगा मुंडा इलाके के साथ निचली बस्तियों में नालियां जाम होने से सड़कें पानी में डूब गई हैं। मां प्रसाद मुखर्जी वार्ड में लोगों के घरों में भी नालियों का पानी घुस गया है। बारिश के चलते बस्तर जिले में आज सभी स्कूल बंद हैं। रेलवे ट्रैक पर भूस्खलन से किरंदुल-विशाखापट्टनम रूट की 2 ट्रेनें और जगदलपुर-हैदराबाद फ्लाइट रद्द कर दी गई है। गरियाबंद में 24 घंटे में 200 मिमी से ज्यादा बारिश दर्ज हुई है। इससे 10 साल पहले आई बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। गरियाबंद और कांकेर में भारी बारिश के चलते प्रशासन ने होने वाली तिमाही परीक्षा रद्द कर दी है। सिकासार बांध से सुरक्षा के लिए 15,500 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है।

### लैंडस्लाइड से 2 ट्रेनें रद्द,जगदलपुर-हैदराबाद फ्लाइट भी कैंसिल

भारी बारिश के कारण रायगढ़ मंडल के एमवीजी-सीटीएस स्टेशनों के बीच रेलवे ट्रैक पर लैंडस्लाइड हुआ है। इसके चलते किरंदुल-विशाखापट्टनम रूट की दो प्रमुख ट्रेनें रद्द कर दी गई हैं। इनमें 58502/58501 किरंदुल-विशाखापट्टनम पैसेंजर और 18516/18515 किरंदुल-विशाखापट्टनम एक्सप्रेस शामिल हैं। बारिश के कारण जगदलपुर-हैदराबाद फ्लाइट भी रद्द कर दी गई है। सुकमा और बीजापुर के कई गांवों में बारिश के बाद बाढ़ जैसे हालात हैं। पानी भरने से कई गांव टापू में बदल गए हैं। दक्षिण छत्तीसगढ़ में भारी बारिश से इंद्रावती नदी उफान पर है और निचले इलाकों में अलर्ट जारी किया गया है। गरियाबंद के देवभोग और अमलीपदर में तीन दिन से लगातार बारिश हो रही है। तेल और सुखतेल नदी समेत कई बरसाती नाले उफान पर हैं। कई घरों में पानी घुस गया है और हजारों एकड़ खेत जलमग्न हो गए हैं। लोग रातभर घर का सामान बचाने में जुटे रहे। 24 घंटे में 200 मिमी से ज्यादा बारिश दर्ज होने से 10 साल पहले आई बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। भारी बारिश के चलते प्रशासन ने आज से होने वाली त्रैमासिक परीक्षा रद्द कर दी है। सिकासार बांध से सुरक्षा के लिए 15,500 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है।

### पुल के ऊपर बह रहा पानी

सुकमा जिले की शबरी नदी का जलस्तर बढ़ने से झापरा पुल के ऊपर पानी बह रहा है। पुल पर आवागमन बंद होने से एक दर्जन से ज्यादा पंचायतों का जिला मुख्यालय से संपर्क टूट गया है। वहीं,एर्राबोर में एनएच-30 और सुकमा-दोरनापाल मार्ग पर भी पानी आने से यातायात प्रभावित हुआ है।

### मध्य-दक्षिण छत्तीसगढ़ में भारी बारिश के आसार

मौसम विभाग के अनुसार, उत्तरी तटीय आंध्र प्रदेश और उससे लगे दक्षिणी ओडिशा के ऊपर बना गहरा लो प्रेशर एरिया उत्तर-पश्चिम दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके असर से मध्य और दक्षिण छत्तीसगढ़ में कुछ जगहों पर भारी से बहुत भारी बारिश होने की संभावना है।

### बस्तर में स्कूल बंद,परीक्षा रद्द

बस्तर जिले में लगातार बारिश और बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए जिले के सभी शासकीय,निजी और अनुदान प्राप्त स्कूलों में छुट्टी घोषित की गई है। 24 सितंबर को भी जिले के स्कूल बंद रहे। 25 सितंबर को होने वाली त्रैमासिक परीक्षा के संबंध में अलग से निर्देश जारी किए जाएंगे।

### इंद्रावती के किनारे मुनादी,रपटों पर बैरिकेडिंग

बारिश के बीच इंद्रावती नदी के तटीय और निचले इलाकों में प्रशासन ने अलर्ट जारी किया है। कलेक्टर आकाश छिकारा ने एसडीएम,तहसीलदारों और होमगार्ड कमांडेंट को फील्ड में रहकर स्थिति पर नजर रखने के निर्देश दिए हैं। निचले इलाकों में मुनादी कर लोगों को सतर्क किया जा रहा है। जलमग्न होने की आशंका वाले रपटों और पुल-पुलियों पर दोनों ओर बैरिकेडिंग कर कोटवार और निगरानी दल तैनात किए गए हैं। प्रशासन ने लोगों से उफनती नदी, नालों और रपटों को पार नहीं करने की अपील की है। आपात स्थिति में बाढ़ आपदा नियंत्रण कक्ष से संपर्क करने को कहा गया है।

### सीएम साय ने सभी कलेक्टरों से कहा-अलर्ट रहें आम जनता को नहीं होनी चाहिए कोई परेशानी

प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही भारी बारिश को देखते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रशासन को पूरी तरह सतर्क रहने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने सभी जिला कलेक्टरों को बारिश और संभावित बाढ़ की स्थिति पर लगातार नजर रखने तथा आवश्यकता पड़ने पर तत्काल राहत एवं सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा, हमने प्रशासन को पूरी तरह अलर्ट रखा है। सभी कलेक्टरों को निर्देश दिए गए हैं कि भारी बारिश के कारण कहीं भी किसी प्रकार की आवश्यकता उत्पन्न होती है तो तत्काल आवश्यक कदम उठाया जाए। आम जनता को किसी तरह की परेशानी न हो, यह सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों से भी भारी बारिश के दौरान विशेष सावधानी बरतने की अपील की है। उन्होंने कहा कि नागरिक अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा को प्राथमिकता दें तथा प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें। मुख्यमंत्री ने लोगों से नदी-नालों, जलप्रपातों और उफनते जलस्रोतों के पास नहीं जाने की अपील की है, क्योंकि पानी का बहाव अचानक बढ़ सकता है।

उन्होंने कहा कि जलमग्न पुल-पुलियों एवं सड़कों को किसी भी स्थिति में पार करने का प्रयास न करें और जिन स्थानों पर सुरक्षा की दृष्टि से बैरियर लगाए गए हैं, वहां प्रशासन के निर्देशों का अनिवार्य रूप से पालन करें। भारी बारिश के दौरान बिना आवश्यकता यात्रा करने से बचें, विशेषकर रात के समय अतिरिक्त सावधानी रखें। गिरे हुए बिजली के तारों अथवा विद्युत संबंधी किसी खतरे से दूर रहें और इसकी सूचना तत्काल संबंधित विभाग, स्थानीय प्रशासन अथवा पुलिस को दें।

### गंगरेली बांध भी लबालब 14 गेट खोले गए...

खाड़ी में बना चक्रवात 'अर्नब' बीती रात ओडिशा और आंध्रप्रदेश के तटीय से जा टकराया। इसके प्रभाव से छत्तीसगढ़ में पिछले 48 घंटों से लगातार बारिश का दौर जारी है। बस्तर का इलाका सबसे ज्यादा प्रभावित है। यहां झमाझम बारिश ने महानदी और इंद्रवती नदी का जलस्तर बढ़ा दिया है। कई जिले बाढ़ की चपेट में है। स्कूलों में छुट्?टी दे दी गई है गंगरेली बांध भी लबालब भरने से 14 गेट खोले गए हैं। इससे निचले क्षेत्र जैसे राजिम, नवापारा की ओर बाढ़ का खतरा बना हुआ है। मौसम विभाग ने 20 से अधिक जिलों में बारिश को लेकर चेतावनी जारी की है।

### प्रदेश में अब तक 100.1 प्रतिशत सामान्य वर्षा दर्ज

छत्तीसगढ़ में इस साल मानसून की बारिश ने सामान्य औसत का आंकड़ा पार कर लिया है। राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग के 25 सितंबर 2026 तक के आंकड़ों के मुताबिक प्रदेश में अब तक 100.1 प्रतिशत सामान्य वर्षा दर्ज की गई है। 1 जून से 25 सितंबर की अवधि में राज्य में औसतन 1082.4 मि.मी. वर्षा रिकॉर्ड की गई, जबकि बीते 10 वर्षों के आधार पर इस अवधि की संभावित औसत वर्षा 1081.5 मि.मी. मानी जाती है। बीते 24 घंटों में ही राज्य के विभिन्न हिस्सों में औसतन 52.8 मि.मी. पानी बरसा है। कोंडागांव जिले में पिछले तीन दिनों से लगातार बारिश हो रही है। इसके चलते नदी-नाले उफान पर हैं। कई ग्रामीण इलाकों में सड़कें जलमग्न हो गई हैं और पुल-पुलियों के ऊपर पानी आने से कई गांवों का जिला मुख्यालय से संपर्क कट गया है। सुरक्षा को देखते हुए 25 सितंबर को जिले के सभी स्कूलों में अवकाश घोषित किया गया है। लगातार बारिश को देखते हुए प्रशासन ने प्रभावित क्षेत्रों में बचाव और राहत टीमों को भेजा है। टीमें जलभराव और बढ़े हुए जलस्तर वाले इलाकों का जायजा ले रही हैं। लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जा रहा है। प्रशासन ने लोगों से नदी-नालों और जलभराव वाले क्षेत्रों से दूर रहने की अपील की है।

# नकली होलोग्राम से शराब तस्करी के बड़े सिंडिकेट का भंडाफोड़...3229 लीटर शराब जब्त,7 आरोपी गिरफ्तार

**महासमुंद,25 सितम्बर 2026।** जिले में अवैध शराब के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत सरायपाली पुलिस ने शराब तस्करी के एक बड़े संगठित नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने नकली होलोग्राम और छत्तीसगढ़ स्टेट के फर्जी लेबल लगाकर शराब की तस्करी और बिक्री करने वाले आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की है। कार्रवाई में कुल 3229 लीटर से अधिक अवैध अंग्रेजी शराब जब्त की गई है, जिसकी कीमत करीब 22.15 लाख रुपये बताई गई है। पुलिस के मुताबिक,शराब तस्करी का यह नेटवर्क महासमुंद,सारंगढ़,रायगढ़ और जांजगीर जिले के अलग-अलग इलाकों में फैला हुआ था। मामले में पहले पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया था, जबकि जांच के दौरान दो अन्य आरोपियों को भी हिरासत में लिया गया है।

पुलिस की कार्रवाई के दौरान डस्टर कार क्रमांक CG 04 PS 3481 से 25 पेटियों में भरी 1192 पौव्वा गोवा अंग्रेजी शराब बरामद हुई। इसकी कुल मात्रा 214 लीटर 560 मिलीलीटर और कीमत करीब 1,43,040 रुपये बताई गई है। वहीं, एक कंटेनर ट्रक क्रमांक HR-13-X-3220 की तलाशी लेने पर उसमें 345 पेटी गोवा अंग्रेजी शराब मिली। प्रत्येक पेटी में 48-48 पौव्वे थे। कुल मात्रा 2980 लीटर 800 मिलीलीटर और कीमत करीब 19,87,200 रुपये बताई गई है। इसके अलावा आरोपी अमित पटेल के कब्जे से अलग-अलग ब्रांड की 46 बोतल अंग्रेजी शराब भी बरामद की गई, जिनमें कुल 34 लीटर 500 मिलीलीटर शराब थी। इस तरह पुलिस ने कुल 3229 लीटर 860 मिलीलीटर शराब जब्त की, जिसकी कीमत 22,15,120 रुपये बताई गई है। जांच के दौरान शराब की बोतलों पर लगे होलोग्राम और लेबल को लेकर संदेह हुआ। आबकारी विभाग की जांच में इनके नकली होने की पुष्टि हुई।

# बालोद में गेहूं लोड ट्रक ने पिकअप को मारी टक्कर,6 मौते

## बालोद के मरकाटोला घाट में हादसा, ट्रक के नीचे दबे मिले शव,7 गंभीर घायल

**बालोद,25 सितम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में गेहूं से भरे ट्रक ने सड़क किनारे खड़ी पिकअप को टक्कर मार दी। हादसे में पिकअप सवार 6 लड़कों की मौत हो गई, 7 गंभीर घायलों को रायपुर रेफर किया गया है। हादसा शुक्रवार दोपहर करीब 1 बजे जगदलपुर नेशनल हाइवे पर मरकाटोला घाट के पास हुआ। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ट्रक सड़क पर पलट गया। ट्रक के नीचे दबे लोगों की जान गई है, जबकि टक्कर लगने से दूर जा गिरे लड़के घायल हो गए। सूचना मिलते ही डायल-112 की टीम घटनास्थल पर पहुंची और घायलों को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। घटना पुरूर थाना क्षेत्र की है। सभी मृतक कवर्धा के रहने वाले हैं। पिकअप में साउंड सिस्टम का सेटअप बंधा हुआ था। सभी लड़के जगदलपुर जा रहे थे। गाड़ी खराब होने के कारण सड़क किनारे खड़े थे, तभी हादसा हो गया। ट्रक ड्राइवर मौके से फरार है। घटना पर सीएम साय ने दुख जताया है।

### मुख्यमंत्री साय ने जताया दुःख

इस घटना पर मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने दुख जताया है। उन्होंने हादसे में जान गंवाने वालों के परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना की। साय ने कहा कि इस दुख की घड़ी में सरकार प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है।

**साउंड सिस्टम लेकर जगदलपुर जा रहे थे :** जानकारी के मुताबिक, पिकअप में धुमाल बाजा और डीजे साउंड सिस्टम का सेटअप बंधा हुआ था। 13 लड़के सवार थे। शुक्रवार सुबह रायपुर में गणेश विसर्जन के बाद सभी जगदलपुर जा रहे थे। तभी मरकाटोला घाट के पास उनकी गाड़ी खराब हो गई।

**ट्रक के नीचे दबे मिले लड़के :** बारिश से बचने के लिए सभी पिकअप के अंदर बैठे हुए थे। इसी दौरान पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे ट्रक ने पिकअप को टक्कर मार दी। कुछ लड़के दूर जा गिरे, कुछ ट्रक के नीचे दबे मिले। पिकअप के परखच्चे उड़ गए। शुरुआती जानकारी के अनुसार, लगातार बारिश के कारण सड़क पर फिसलन थी। इसी वजह से हादसा होने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि, दुर्घटना का वास्तविक कारण अभी स्पष्ट नहीं है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

**मरकाटोला घाट में यातायात प्रभावित :** हादसे के बाद मरकाटोला घाट में यातायात भी प्रभावित हुआ। पुलिस ने मौके पर स्थिति संभाली और मृतकों व घायलों से जुड़ी जानकारी जुटाई। गुरुर एसडीओपी माया शर्मा ने हादसे में 6 मौतों की पुष्टि की है। अन्य घायलों का इलाज जारी है।

# छत्तीसगढ़ मंत्रालय में 22 अफसरों के विभाग बदले...

## विवेक श्रीवास को गृह,मगनलाल पवार को स्वास्थ्य;सामान्य प्रशासन विभाग ने जारी किया आदेश

**रायपुर,25 सितम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ मंत्रालय में एक बार फिर प्रशासनिक फेरबदल हुआ है। सामान्य प्रशासन विभाग ने सचिवालय सेवा के उप सचिव और अवर सचिव स्तर के 22 अधिकारियों की नई पदस्थापना की है। 25 सितंबर को जारी आदेश के बाद इन अधिकारियों के विभाग और जिम्मेदारियों में बदलाव किया गया है। फेरबदल में गृह, स्वास्थ्य, वित्त, नगरीय प्रशासन, स्कूल शिक्षा और अन्य महत्वपूर्ण विभाग शामिल हैं।

**गृह से नगरीय प्रशासन तक बदलाव :** उप सचिव डॉ. विवेक श्रीवास को जेल विभाग के साथ गृह विभाग का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। मार्टिन लकड़ा को पशुधन विकास एवं मछली पालन विभाग से हटाकर धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। वहीं रोमन गंगाकचूर अब वित्त विभाग की जगह नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग संभालेंगे। रामेश्वर प्रसाद वर्मा को स्कूल शिक्षा से सहकारिता विभाग भेजा गया है। शांता खरे को वित्त से ग्रामोद्योग और मगनलाल पवार को वाणिज्य एवं उद्योग विभाग से स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग में पदस्थ किया गया है। रेखा साहू को संसदीय कार्य विभाग से हटाकर जन शिकायत निवारण विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। सुभाषचंद कुजूर महिला एवं बाल विकास विभाग में यथावत रहेंगे। उनके कार्यभार संभालने के बाद लवीना पाण्डेय को इस विभाग के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त किया जाएगा। इससे उनका अतिरिक्त कार्यभार भी समाप्त हो जाएगा। अवर सचिव अमितोष जॉन को खाद्य विभाग से वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग भेजा गया है। सुनीता गौतम अब परिवहन की जगह सामान्य प्रशासन विभाग के कक्ष-4 में रहेंगी। दीपकुमार खेस्स को ग्रामोद्योग से खेल एवं युवा कल्याण तथा नूतन अजगर को चिकित्सा शिक्षा से पशुधन विकास एवं मछली पालन विभाग की जिम्मेदारी दी गई है।

# मानव तस्करी सिंडिकेट...10 ठिकानों पर छापेमारी में 1.48 करोड़ रुपये नगद जब्त,5 मुख्य आरोपी गिरफ्तार

**महासमुंद,25 सितम्बर 2026।** छत्तीसगढ़ की महासमुंद पुलिस ने मानव तस्करी के एक बड़े और संगठित नेटवर्क का खुलासा किया है। यह सिंडिकेट छत्तीसगढ़ और पड़ोसी ओडिशा समेत अन्य राज्यों में सक्रिय था। पुलिस टीम ने नेटवर्क से जुड़े 10 ठिकानों पर एक साथ दबिश देकर करीब 1 करोड़ 48 लाख 54 हजार 750 रुपये नगद बरामद किए हैं। पुलिस के अनुसार, मामले की शुरुआत एक नाबालिग से जुड़े प्रकरण की जांच से हुई। 21 सितंबर को अस्पताल से मिले मेमो के आधार पर जांच शुरू की गई, जिसमें नाबालिग के शारीरिक शोषण और गर्भवती होने की जानकारी सामने आई। प्रारंभिक जांच में पुलिस को मानव तस्करी और बंधुआ मजदूरी से जुड़े संगठित नेटवर्क के

सुराग मिले। पुलिस के मुताबिक, गिरोह के सदस्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और मजदूरों को एडवांस रकम देकर अपने जाल में फंसाते थे। इसके बाद उन्हें दूसरे राज्यों में ईंट भट्ठों और अन्य स्थानों पर मजदूरी के लिए भेजा जाता था। पुलिस ने दावा किया है कि कुछ मामलों में डर, दबाव और धमकी का इस्तेमाल भी किया गया। जांच में मिले दस्तावेजों के आधार पर पुलिस ने दावा किया है कि गिरोह से जुड़े लोगों के माध्यम से बड़ी संख्या में मजदूरों को अलग-अलग राज्यों में भेजा जाता था।

पुलिस के मुताबिक प्रत्येक आरोपी के नेटवर्क में हजारों मजदूरों के रिकॉर्ड मिले हैं और इनमें बंधुआ मजदूरी के भी दस्तावेजी साक्ष्य मिले हैं। छापेमारी के दौरान पुलिस ने मजदूर पलायन से संबंधित रजिस्टर और डायरी,मोबाइल फोन,बैंक पासबुक,चेकबुक,एटीएम कार्ड, मॉर्गेज से जुड़े दस्तावेज और नोट गिनने की मशीन समेत कई महत्वपूर्ण सामग्री जब्त की है। पुलिस इन दस्तावेजों और इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्यों की जांच कर रही है। पुलिस ने इस मामले में मुकेश चंद्राकर,लता सवर,नंदू मोहंती,पीयूष अग्रवाल और मनीष गुप्ता को गिरफ्तार किया है।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफ्सेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)